CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

14.5

ॐ

# दैनिक पूजा पाठ मन्दिर विधि

: सम्पादक :

धर्मदिवाकर पूज्य ब्र० श्री गुलाबचन्द जी महाराज

: प्रकाशक :

मन्त्री—श्री तारणतरण जैन तीर्थक्षेत्र निसई जी ट्रस्ट

5256

: प्राप्ति-स्थान :

श्री निसई जी तीर्थक्षेत्र

पो० मल्हारगढ़ (बाया मुंगावली)

( जिला-गुना ) म० प्र०

प्रतियां ५०० | जुलाई १९७१ | मूल्य— रु० १=६५

Ganesh-Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5256

# भूमिका

दैनिक पूजा पाठ मन्दिर विधि में प्रायः प्रतिदिन करनेवाली पूजन विधि और वे सभी पाठ जो सामान्यतया प्रतिदिन पढ़े जाते हैं या पढ़ना चाहिये, जैसे तारण त्रिवेणी आदि, उन सभी का संग्रह किया गया है। तथा अष्टमी चतुर्दशी, दशलक्षण पर्व और वार्षिक मेला अथवा मन्दिर वेदी प्रतिष्ठा जैसे अवसरों में जो वृहत् मन्दिर विधि की जाती है उन सबका भी संग्रह इसमें किया गया हैं।

दूसरी एक विशेषता इसमें यह रखी गई है कि जो श्रीमन्त सेठ समाजभूषण जी सागर वालों की ओर से "तारण जिनवाणी संग्रह" छपी है, जिसमें ५ अध्यायों का संग्रह किया गया है उसी के अनुरूप क्रमशः पहला तथा दूसरा भाग इसमें मुद्रित इस दृष्टि से किया गया है कि जिस समय सामूहिक रूपसे पूजन अथवा मन्दिर विधि होती है, उस समय गद्दी पर विराजित "तारण जिनवाणी संग्रह" के आधारभूत प्रमुख वक्ता जो भी पढ़ें उन्हीं के अनुरूप सर्व साधारण जन जिनके हाथों में यह पुस्तक हो वे भी क्रमशः एक ही साथ में पढ़ सकें या दोहरा सकें। जैसी कि एक साथ सामूहिक रूपसे पढ़ने की अपनी समाज में सुन्दर प्रणाली प्रचलित है।

इस पुस्तक की ५०० प्रतियाँ छपी हैं। जिनमें २५० प्रतियाँ स्वर्गीय सेठ लखमीचन्द जी मिरजापुर वालों की धर्मपत्नी श्री कस्तूरीबाई जी की ओर से व्रतोद्यापन के उपलक्ष में तथा १२५ प्रतियाँ श्री जगरानी बहू फुटेरा निवासी की ओर से, शेष १२५ प्रतियाँ ब्रह्मचारिणी मुक्तिश्री बहिन जी के आहारोपलक्ष में जो राशि खैरी प्रतिष्ठा, छिंदवाड़ा, पिपलानी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तथा बाँदा में दानस्वरूप प्राप्त हुई थीं के द्वारा छपी हैं। जबकि इसके पूर्व लगभग ३ साल के भ्रमण में मुक्तिश्री बहिनजी को जो राशि लगभग रु० १०००) आहारोपलक्षमें दानस्वरूप प्राप्त हुई थी उसे श्री सेमरखेड़ी जी क्षेत्र में पंचायती नाम से एक कमरा बनने हेतु जमा कर दी गई है।

विशेष सप्रेम सन्देश अथवा प्रेरणा यही है कि प्रत्येक भाई बहिनों तथा पुत्र-पुत्रियों को अपने धार्मिक संस्कारों को बनाये रखने के लिए प्रतिदिन श्री चैत्यालय जी जाने की प्रतिज्ञा लेनी चाहिये तथा यथावसर जाप सामायिक करना और इस पुस्तक के आधारभूत पूजन पाठ तथा स्वाध्याय करना अपने जीवन का एक अनिवार्य अङ्ग मानना चाहिये।

शुभाकांक्षीः—
ब्र० गुलाबचन्द।

१६ मई, ७१
गुरु पर्वी २०२८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

# विषय-सूची


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| दर्शन पाठ | १ |
| गुण जाप्य माला | २ |
| लघु सामायिक | ३ |
| १०८ गुणों की जाप | ४ |
| देव वन्दना | ७ |
| तारण पंथीय दैनिक पूजा | ८ |
| समवशरण की महिमा | ९ |
| भाव-पूजा | १० |
| देवाङ्गली पूजा | ११ |
| इन्द्रध्वज पूजा | १२ |
| शास्त्रपूजा | १३ |
| गुण पाठ पूजा | १३ |
| ग्यारह नमस्कार | १४ |
| मेरी द्रव्य पूजा | १६ |
| द्रव्यपूजा भावपूजा | १८ |
| गुरु तारण स्तोत्र | १९ |
| आरती तारण स्वामी | २० |
| आरती ॐ जय प्रभु देवा | २० |
| साधारण मन्दिर विधि | २१ |
| आरती श्री गुरुदेव की | २८ |
| विशेष मन्दिर विधि | २९ |
| दशलाक्षणी पर्व कार्यक्रम | ३० |
| दशलक्षण पाठ | ३१ |
| दश लक्षण धर्म | ३४ |
| सोलह कारण भावना | ३६ |
| तारण त्रिवेणी | ४० |
| श्रावकाचार की चौदह गाथायें | ६४ |
| श्री वृहत चैत्यालय मंदिर विधि | ६६ |
| तीनों आशीर्वाद | ७९ |
| आशीर्वाद अंतिम | ८० |
| अबलबली | ८१ |
| नन्तदिप्ति की आरती | ८२ |
| श्री मंगला आरती तिलक परसाद | ८३ |


Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

# ❀ प्रार्थना ❀

यह आतम राम हमारा है, यह पुद्गल से भी न्यारा है ।
यह आतम देव हमारा, यह आतम देव हमारा ॥ टेक ॥

यह शुद्ध स्वरूपी चिदानन्द, अविनाशी पद का धारी है ।
अखण्ड ज्योति प्रकाशक है, यह आतम राम हमारा ॥१॥

सर्वज्ञ स्वरूपी निराकार, परमात्म-शक्ति का धारी है ।
वीतराग भाव वैरागी है, यह आतम राम हमारा ॥२॥

आनन्द सुधारस पान करे, अरु ज्ञाता-दृष्टाचारी है ।
यह ज्ञानानन्द विहारी है, यह आतम राम हमारा ॥३॥

जड़ चेतन दोनों संग रहें, अरु सत्ता में यह न्यारा है ।
यह क्षीर-नीर सा न्यारा है, यह आतम राम हमारा ॥४॥

यह अजर अमर पद धारी है, अरु अनन्त ज्ञान गुणकारी है ।
जो अनन्त शक्ति प्रदान करे, यह आतम राम हमारा ॥५॥

यह निर्मल कमल प्रफुल्लित है, निर्दोष निरंजन धारी है ।
अनन्तवीर्य सुख भोग सके, यह आतम राम हमारा ॥६॥

यह द्रव्य शुद्ध अविनाशी है, ध्रुव आतम अनुभव धारी है ।
यह चार चतुष्टय प्रगटावे, यह आतम राम हमारा ॥७॥

यह शुद्धोपयोग का प्रेमी है, अरु शाश्वत शुद्ध स्वरूपी है ।
आनन्द मगन हो "मुक्ति श्री" यह आतम राम हमारा ॥८॥

यह आतम राम हमारा है, यह पुद्गल से भी न्यारा है ।
यह आतम देव हमारा, यह आतम देव हमारा ॥९॥

---

कीर्तनध्वनि— सामूहिक रूप से उच्चारण की जाये—
"आनन्द सुधारस पान करे, यह ज्ञानानन्द विहारी है ।"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ

❀ वन्दे श्रीगुरु तारणम् ❀

# तारण जिनवाणी संग्रह

## प्रथम—अध्याय

卐

### पंच परमेष्ठी मंगल

अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिता सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः ।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा, पूज्या उपाध्यायकाः ॥
श्रीसिद्धान्तसुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः ।
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥

### दर्शन पाठ

दर्शनं देव—देवस्य दर्शनं पाप-नाशनम् ।
दर्शनं स्वर्गसोपानं दर्शनं मोक्षसाधनम् ॥२॥
दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वन्दनेन च ।
न चिरं तिष्ठते पापं छिद्रहस्ते यथोदकम् ॥२॥
वीतराग—मुखं दृष्ट्वा पद्मराग-सम-प्रभं ।
जन्म-जन्म—कृतं पापं दर्शनेन विनश्यति ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



दर्शनं जिन-सूर्य्यस्य संसार-ध्वान्त-नाशनम् ।
बोधनं चित्त-पद्मस्य समस्तार्थ-प्रकाशनम् ॥४॥
दर्शनं जिनचन्द्रस्य सद्धर्म्मामृत-वर्षणम् ।
जन्मदाहविनाशाय वर्द्धनं सुख-वारिधेः ॥५॥
जीवादितत्वप्रतिपादकाय सम्यक्त्वमुख्याष्टगुणाश्रयाय ।
प्रशान्तरूपाय दिगम्बराय देवाधिदेवाय नमो जिनाय ॥६॥
चिदानन्दैकरूपाय जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय नित्यं सिद्धात्मने नमः ॥७॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥८॥
जिनधर्म-विनिर्मुक्तो माऽभूत् चक्रवर्त्यपि ।
स्याच्चेटोपि दरिद्रोपि जिनधर्मानुवासितः ॥९॥
जन्म-जन्मकृतं पापं जन्म—कोट्यामुपार्जितं ।
जन्ममृत्युजरातंकं हन्यते जिनदर्शनात् ॥१०॥
न हि त्राता न हि त्राता नहि त्राता जगत्त्रये ।
वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति ॥११॥
जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने ।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु भवे भवे ॥१२॥

卐

# गुण जाप्य-माला

## जाप-सामायिक करने की विधि

जाप-सामायिक करने वाले श्रावक श्राविकाओं को पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके खड़े होकर मन वचन काय की शुद्धता पूर्वक तीन वार अथवा ९ वार णमोकार मन्त्र का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



शुद्ध उच्चारण करना चाहिये। तत्पश्चात् तीन तीन बार णमोकार मन्त्र का उच्चारण करते हुए चारों दिशाओं में चार आवर्त्त करके अपने आसन पर पद्मासन, अर्ध पद्मासन, सुखासन अथवा खड्गासन में सावधानतापूर्वक स्थित होजाना चाहिये। आसन में स्थित होकर सर्वप्रथम "लघु सामायिक पाठ" पढ़े। पश्चात् हाथ में ली हुई माला के सुमेरु के तीन गुरियों पर देव, गुरु और धर्म को नमस्कार कर १०८ गुणों की आराधना (जाप) करना चाहिये।

卐

## लघु सामायिक

संरंभ, समारंभ, आरंभ, कृत, कारित, अनुमोदना, क्रोध, मान, माया, लोभ ऐसे १०८ प्रकार से हिंसा कर कर्मास्रव होय ताको मन-वचन-काय से त्यागूं हूँ। तन-धन-कुटुम्ब के ममत्व को त्यागूं हूं। चार प्रकार के उपसर्ग विषे चार प्रकार के आहार को त्यागूं हूं। अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, केवली भणीत जिन वचन, ये ही उत्कृष्ट हैं। इन्हीं की शरण वांछूं हूँ। क्षेत्र के अवगाहन, आकाश के प्रदेश, काल के समय जेती काल सामायिक करूं, तेती काल मर्यादा है। छह काय के जीवन उत्तम क्षमा करूं, कराऊं और करने वाले को भला जानूं हूं।

पांच मिथ्यात्व, बारह अव्रत, पन्द्रह योग, पच्चीस कषाय, ऐसे सत्तावन आस्रव कर पाप लागो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥ नित्य निगोद ७ लाख, इतर निगोद ७ लाख, पृथ्वी काय ७ लाख, अपकाय ७ लाख, तेजकाय ७ लाख, वायुकाय ७ लाख, वनस्पतिकाय १० लाख, दोइन्द्री २ लाख, तेइन्द्री २ लाख, चौइन्द्री २ लाख, नरकगति ४ लाख, देवगति ४ लाख, तिर्यंचगति ४ लाख, मनुष्यगति १४ लाख, इस प्रकार ८४ लाख योनि माता पक्षे, १९९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



लाख कुलकोडि पिता पक्षे, पर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त, लब्ध्यपर्याप्त में जो कोई जीव की विराधना करी होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ तथा रागद्वेष कर पाप लागो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं । त्रिदंड, त्रिशल्य, त्रिगारव करीने पाप लागो होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ राजकथा, चोरकथा, स्त्रीकथा, भोजनकथा करीने पाप लागो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं । चार आर्तध्यान, चार रौद्रध्यान करीने पाप लागो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं । अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार करीने पाप लागो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं । पंच स्थावर, छठवें त्रस जीवन की विराधना, पंचेन्द्रिय तथा मनकर करीने पाप लागो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं । सप्त भय करीने पाप लागो होय, अष्ट मद करीने पाप लागो होय, अष्ट मूलगुण व्रत के अतीचार करीने पाप लागो होय, दश प्रकार बाह्य परिग्रह करीने पाप लागो होय, चौदह आभ्यन्तर परिग्रह करीने पाप लागो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं । पन्द्रह प्रमाद करीने पाप लागो होय, पचीस मल करीने पाप लागो होय, पांच अतीचार करीने पाप लागो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं । हमारे सम्यक्त्व विषे किसी प्रकार दोष लागा होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं । दुष्परिणाम कर, दुश्चेष्टा कर, दुराचार कर पाप लागो होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं । हींडता, बोलता, चालता, सोवता, मार्ग विषे देखे अनदेखे, सूक्ष्म बादर कोई जीव चांपो होय, भय पायो होय, त्रास पाया होय, छेदन पायो होय, भेदन पायो होय, दुःख पायो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं । यतिराज, अर्जिका, श्रावक, श्राविका की अविनय तथा निन्दा करी होय, कराई होय, अनुमोदना करी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं । देव गुरु शास्त्र की अविनय करी होय, संकल्पित द्रव्यके विषे पाप लागो होय, सामायिक के ३२ दोष में से कोई दोष लागो होय, पांच इन्द्रिय के सत्ताईस विषय कर पाप लागो होय तस्स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



मिच्छामि दुक्कडं। हमारा किसी के साथ वैर नाहीं, विरोध नाहीं, राग नाहीं, रोष नाहीं, मान नाहीं, माया नाहीं, हमारे समस्त जीवों के साथ उत्तम क्षमा भाव प्रवर्त्यो। तथा चहुंगति दुख निवारण, जिन गुण सम्पत्ति भव-भव मुझे होउ।

ॐ जय ३, नमोऽस्तु ३, चत्तारि मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, चत्तारि शरणं भवभव मुझे होउ।

## श्री १०८ गुणों की जाप

परमेष्ठी ५—अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु।
रत्नत्रय ३—श्री सम्यग्दर्शन, श्री सम्यग्ज्ञान, श्री सम्यक्चारित्र।
अनुयोग ४—प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग।

## सिद्ध पूजा यन्त्र

सिद्ध के गुण ८—१ सम्यक्त्व, २ दर्शन, ३ ज्ञान, ४ अगुरुलघुत्व, ५ अवगाहनत्व, ६ सूक्ष्मत्व, ७ वीर्यत्व, तथा ८ निराबाधत्व।

## अर्हन्त पूजा यन्त्र

सोलह कारण भावना—१-दर्शन विशुद्धि, २-विनय सम्पन्नता, ३-शीलव्रतेष्वनतिचार, ४-अभीक्ष्ण—ज्ञानोपयोग, ५-संवेग, ६-शक्तितस्त्याग, ७-शक्तितस्तप, ८-साधुसमाधि, ९-वैया-वृत्यकरण, १०-अर्हत्भक्ति, ११-आचार्य-भक्ति, १२-बहुश्रुतभक्ति, १३-प्रवचन भक्ति १४-आवश्यक अपरिहाणि, १५-मार्गप्रभावना, १६-अन्तसल्लेखनासार।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



## आचार्य उपाध्याय का यन्त्र

दश विधि धर्म—१-उत्तम क्षमा, २-मार्दव, ३-आर्जव, ४-सत्य, ५-शौच, ६-संयम, ७-तप, ८-त्याग, ९-आकिंचन्य, १०-ब्रह्मचर्य ।

## साधु पूजा का यन्त्र

(अ) दर्शन के अंग ८—१-निःशंकित, २-निःकांक्षित, ३-निर्विचिकित्सा, ४-अमूढ़ दृष्टि, ५-उपगूहन, ६-स्थितिकारण, ७-वात्सल्य, ८-प्रभावना ।

(ब) ज्ञान के अंग ८—१-व्यंजनोर्जिताय नमः, २-अर्थसमग्राय नमः, ३-शब्दार्थभावपुण्याय नमः, ४-कालाध्ययनसमग्राय नमः, ५-बहुमानसमग्राय नमः, ६-उपधानसमग्राय नमः, ७-वीर्याध्ययनसमग्राय नमः, ८-विनयेन मुदिताय नमः ।

(स) तेरह प्रकार चारित्र का यन्त्र—

महाव्रत ५—१-अहिंसा महाव्रत, २-सत्य महाव्रत, ३-अचौर्य महाव्रत, ४-ब्रह्मचर्य महाव्रत, ५-परिग्रह त्याग महाव्रत ।

गुप्ति ३—१-मनोगुप्ति, २-वचन गुप्ति, ३-कायगुप्ति ।

समिति ५—१ ईर्या समिति, २ भाषा समिति, ३ एषणा समिति, ४ आदान निक्षेपण समिति, ५ प्रतिष्ठापना समिति ।

। इस प्रकार ७५ गुण ।

## तत्व २७ की विधि

तत्व ७—१ जीवतत्व, २ अजीवतत्व, ३ आस्रवतत्व, ४ बन्धतत्व, ५ संवर तत्व, ६ निर्जरातत्व, ७ मोक्षतत्व ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



पदार्थ ९—१ जीव पदार्थ, २ अजीव पदार्थ, ३ पुण्य पदार्थ ४ पाप पदार्थ, ५ आस्रव पदार्थ, ६ बन्ध पदार्थ, ७ संवर पदार्थ, ८ निर्जरा पदार्थ ९ मोक्ष पदार्थ।

द्रव्य ६—१ जीवद्रव्य, २ पुद्गलद्रव्य, ३ धर्मद्रव्य, ४ अधर्म द्रव्य, ५ कालद्रव्य, ६ आकाशद्रव्य।

पंचास्तिकाय ५—१ जीवास्तिकाय, २ अजीवास्तिकाय, ३ धर्मास्तिकाय, ४ अधर्मास्तिकाय, ५ आकाशास्तिकाय।

सम्यक्त्व ६–१ मूल सम्यक्त्व, २ आज्ञा सम्यक्त्व, ३ वेदक-सम्यक्त्व, ४ उपशम सम्यक्त्व, ५ क्षायिक सम्यक्त्व, ६ शुद्ध-सम्यक्त्व।

॥ इति अष्टोत्तरशत गुण जाप्यमाला ॥

卐

## देव–वन्दना

जामें अष्ट प्रातिहार्य जामें चतुष्टय चार,
जामें तीसचार अतिशय निहारे हैं।
जामें पंच ज्ञान जामें सम्यग्विधान,
जामें शुद्ध तीन रत्नत्रय शोभा अधिकारे हैं।
चाहे जहां डालें मुख धर्म उपदेश बोलें,
चेतना स्वभाव लिये चेतना–विहारी हैं।
संयम तप नेम योग शील गुणधारी सदा,
ऐसी जिन-मूरति ताहि बन्दना हमारी है।

समय हो तदनुसार आलोचना पाठ तथा कोई भी स्तुति पढ़ना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



चाहिये। और अन्त मंगल स्वरूप ३ बार णमोकार मन्त्र कर सामायिक विधि पूरी करनी चाहिये ।

नोट—(क) अन्य आचार्यों ने १६ वीं भावना को प्रवचनवत्सलत्व के नाम से माना है। जब तारण स्वामी ने इसे अन्त सल्लेखनासार भावना माना है ।

(ख) ज्ञानके ७ वें अंगको अन्य आचार्यों ने अनिन्हवाचार कहा है। जब तारणस्वामी ने वीर्याध्ययन माना है, जिसका अर्थ 'शक्ति को न छिपाते हुये अध्ययन करना कराना' होता है ।

卐

# तारणपंथीय दैनिक पूजा

## श्री तत्व-मंगल

( पूजा खड़े होकर और मिलकर भाव से पढ़िये )

तत्वं च नंद आनन्दमउ, चेयानन्द सहाव ।
परम तत्व पदविन्द मय, नमियो सिद्ध सहाव ।
गुरुउवएसिउ गुप्त रुइ, गुपत ज्ञान सहकार ।
तारण तरण समर्थ मुनि, भव संसार निवार ।
धर्म जु ओतो जिनवरहिं, अर्थति अर्थ संजोत ।
भय विनास भव्य जु मुणहु, ममल न्यान परलोय ।
ॐकार से सब भये, डार पत्र फल फूल ।
प्रथम ताहि को वंदिये, यही सबन को मूल ।

— श्लोक —

ॐकारं विन्दुसंयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव, ॐकाराय नमो नमः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



— चौपाई —

ॐकार सब अक्षर सारा, पञ्चपरमेष्ठी तीर्थ अपारा ।
ॐकार ध्यावे त्रैलोका, ब्रह्मा विष्णु महेसुर लोका ॥
ॐकार ध्वनि अगम अपारा, बावन अक्षर गर्भित सारा ।
चारों वेद शक्ति है जाको, ताको महिमा जगत प्रकाशी ॥
ॐकार घट घट परवेसा, ध्यावत ब्रह्मा विष्णु महेसा ।
नमस्कार ताको नित कीजे, निर्मल होय परम रस पीजे ॥

卐

देवदेवं नमस्कृत्वं, लोका-लोक-प्रकाशकं ।
त्रिलोकं अर्थं ज्योतिः ऊवंकार च विंदते ॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
परम गुरुभ्यो नमः, परमपराचार्येभ्यो नमः ।

॥ इति तत्व समाप्तम् ॥

卐

## समवशरण की महिमा

अहो जहां समवशरण जिनवर जू को महिमा, पार न पावें कोय ।
अहो जहाँ चार ज्ञान के धारी गणधर, पार न पावें सोय ॥
अहो जहां नंत चतुष्टय जिन प्रति राजत, केवल बंदना होय ।
अहो जहां सिंहासन शोभित जिनवर को. चहुँ मुख दीसै सोय ॥
अहो जहां क्षुधा तृषा जिनको नहिं व्यापै, रागद्वेष नहिं होय ।
अहो जहाँ रूप सरूप देख जिनवर को, नैन तृपत नहिं होय ॥
अहो जहां सोऽहं शब्द अनक्षर वाणी, सुनत श्रवण सुख होय ।
अहो जहां प्रेम प्रीत से भज मन मेरे, आवागमन न होय ॥

卐

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



# भाव-पूजा

रच भाव के मन्दिर अनूपं, अकल मूरत मांह ।
पुन भाव-सिंहासन विराजै, भाव विन कुछ नांह ॥१॥

भाव ही की करत सेवा, बैठ सन्मुख दास ।
निज भाव ही सब साज आगे, चित्त स्वामी पास ॥२॥

भाव ही के कलश भर धर, भाव नीर नहाय ।
भाव ही के अशन बहु बिध, अंग अंग बनाय ॥३॥

भाव चन्दन भाव केशर, भाव कर घिस लेंय ।
भाव ही के चरच स्वामी, तिलक मस्तक देंय ॥४॥

भाव ही के पुष्प उत्तम, गोय माल अनूप ।
पहराय त्रभु को निरख नखसिख भाव खेवें धूप ॥५॥

भाव ही के जोय दीपक, भाव घृत कर सींच ।
भाव हो की करों त्यारी, धरों थारी बीच ॥६॥

भाव ही करके समरपन, सकल प्रभु कों जोय ।
भाव ही निजभाव मांही, लय निरन्तर होय ।७॥

भाव भाव के संख झालर घंट ताल मृदंग ।
भाभ ही के शब्द नाना, रहें अतिशय रंग ॥८॥

भाव ही की आरती, करत बहुत प्रनाम ।
स्तुति या विध उच्चरें, लहें लहें प्रभु के नाम ॥९॥

भाव-पूजा करो विधि से, या विध रीत बताय ।
श्री सम्यक दर्शन ज्ञान चरण चित लाय ॥१०॥

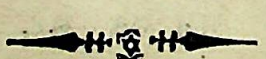

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



( देव-शास्त्र-गुरु )

# देवाङ्गलीय पूजा

ॐ जय जय जय, नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु ।।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोये सव्वसाहूणं ।।

चत्तारि मङ्गलं—अरहंत मङ्गलं, सिद्ध मङ्गलं, साहू मङ्गलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मङ्गलं ।

चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ।

चत्तारि सरण पव्वज्जामि-अरहंत सरणं पवज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।।

— श्लोक —

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पञ्चनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।१।।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् परमात्मानं स वाह्याभ्यन्तरे शुचिः ।।२।

अपराजितमंत्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशनः ।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ।।३।।

एसो पंच णमोयारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलम् ।।४।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम् ।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



कर्माष्टकविनिर्मुक्तम् मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम् ।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ।६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी-भूत-पन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।७॥

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हं ।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्जैनेन्द्रयज्ञविधिरेष मयाभ्यधायि ॥

卐

## इन्द्रध्वज-पूजा

स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुङ्गवाय,
स्वस्ति स्वभावमहिमोदयसुस्थिताय ।
स्वस्ति प्रकाशसहजोर्जितदृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्ननलिताद्भुतवैभवाय ॥
स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय,
स्वस्ति स्वभावपरभावविभासकाय ।
स्वस्ति त्रिलोकवितताैकचिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकालसकलायतविस्तृताय ॥
अर्हत्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव ।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवलबोधवन्हौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः ।
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञम् ॥

卐

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



## शास्त्र–पूजा ( गाथा )

संपइ सुह कारण कम्मवियारण, भवसमुद्र तारण तरणस् ।
जिनवाणि नमस्यं सत्य पयस्यस्, स्वर्ग मोक्ष संगम करणस् ॥
त्रैसट्ठशालायभेयं लट्ठिय पुराण ध्यान अवगहणं ।
वैचारित्रफलायणं प्रतिमान योग एरस करणं ॥
उवाइट्ठं लोयदिढयं दह विहिप्रमाणस्स भणियं ।
करणाय योगएरसकरणं द्वीपसमुद्राय जिनवरंगेहो ॥
वैचारित्रफलाणं क्रियाणपर्मं ऋद्धि सहय्याणं ।
उवा सुग्गे सहय्याणं चरणाण योग एरस भणियं ॥
मोक्खस्स करणं मोक्ख क्रिया मोक्खस्स कारणं मोक्खं ।
हेयं च हियसंती दिव्वाण योग एरस भणियं ॥ इति ॥

卐

## गुणपाठ–पूजा

वारापुंज विशेषं सिद्ध अट्ठामि षोड़सीकरणं ।
दह धर्म दर्शन अट्ठा ज्ञानं अट्ठामि त्रयोदश चरितं ॥
ए पचहत्तर गुण सुद्धं वेदी वेदांत ज्ञानसी सुद्धं ।
मुक्ति सुभावं दृढ़ियं ए गुण आराध सिद्धि सपत्तं ॥
अरहंता छायल्ला सिद्धं अट्ठामि सूर छत्तीसा ।
उवझाया पंचवीसा अठवीसा होंति साहूणं ॥
वरअतिशय चौंतीसा अष्ट महाप्रातिहार्य संजुक्तं ।
नंतचतुष्टै सहियं छायल्ला अरहंतज्ञानस्य ॥
मोहक्षय सम्यक्तं केवलज्ञानेन हनें अज्ञानं ।
केवल दरसण दरसं अनंतवीर्य अनंत रायेना ॥
सुहवं च नाम कम्मं आयुकर्म निरजल अवगहनं ।
गोत्तं अगुरुलघुत्तं अव्वाहं च वेद वेअणियं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



ए आराह अष्ट गुण दहविध धर्म च होय दिढ़ अव्वा ।
वारा तप छयथासी छत्तीस गुण होंति सूरेना ॥
ग्यारह अंग जु सहियं चौदस पूर्वाय निरविशेषाणं ।
पंचवीसा गुणजुक्तं ज्ञाणी ज्ञाणेण तस्य उवझाया ॥
दह दरशण संभेदा भेदा होति पंच ज्ञानेया ।
तेराविधि सो चरितं अठवीसा होंति साहूणं ॥

卐

## ग्यारह नमस्कार

### सिद्धों को नमस्कार

तत्वं च नंद आनन्द मउ, चेयानंद सहाव ।
परम तत्व पदविंद मय, नमियो सिद्ध सहाव ॥

### गुरु को नमस्कार

गुरु उवएसिउ गुप्तरुइ गुपत न्यान सहकार ।
तारणतरण समर्थं मुनी भव संसार निवार ॥

### धर्म को नमस्कार

धर्म जु ओता जिनवरहिं अर्थति अर्थ संजोय ।
भय विनास भव्य जु मुणहु ममस न्यान परलोय ॥

### श्रावकाचार जी को नमस्कार

देवदेवं नमस्कृत्यं लोकाकोक – प्रकाशकं ।
त्रिलोकं अर्थं ज्योतिः ऊवंकारं च विंदते ॥

### ज्ञान समुच्चयसार जी को नमस्कार

परमानंद परम ज्योतिः चिदानंद जिनात्मनं ।
सोहं रूप समयशुद्धं विंदस्थाने नमस्कृत्यं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



त्रिभंगीसार जी को नमस्कार

नमस्कृत्यं महावीरं भव्यानां भयविनाशनं ।
त्रिभंगीदलं प्रोक्तं च आस्रवनिरोधकारणम् ॥

उपदेश शुद्धसार जी को नमस्कार

अप्पाणं सुधप्पाणं परमप्पा विमल निरमलं सरूपं ।
सिद्धसरूपं पीछंती नमामिहं परम देवदेवस्य ॥

कमलबत्तीसी जी को नमस्कार

तत्वं च परमतत्वं परमप्पा परमभाव दरसीये ।
परमजिनं परमेष्ठी नमामिहं परमदेवदेवस्य ॥

पण्डित पूजा जी को नमस्कार

ओंकारस्य ऊर्धस्य ऊर्ध्वं सद्भाव शाश्वतं ।
विंदस्थाने तिष्ठन्ते ज्ञानं मयं शाश्वतं ध्रुवं ॥

माला जी को नमस्कार

ॐकारवेदांत शुद्धात्मतत्वं प्रणमामि नित्यं तत्वार्थसार्थं ।
ज्ञानमयं सम्यक्दर्शनोत्थं सम्यक्त्वचरण चैतन्यरूपं ॥

चौबीस ठाणा जी को नमस्कार

उव उवन्न उवन्न उवन्न विंद विंद भवनं विन्यानं विनयं स्वरं ।
उत्पन्नं नंतानंत स्वयं च स्वरयं, शुद्ध च शुद्धात्मनं ॥
उवनं उवन्न स्वभाव मनस्य ममलं, मय मूर्ति ज्ञानं ध्रुवं ।
लोकालोकस्वयं च स्वरयं, शून्यं सहाव स्वरयं ॥

इति श्री ग्यारह नमस्कार समाप्तम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



# मेरी द्रव्य-पूजा

( स्व० पं० जुगलकिशोर जी मुख्तार )

कृमिकुलकलित नीर है जिसमें, कच्छ मच्छ मेढक फिरते ।
हैं मरते औ वहीं जनमते प्रभो मलादिक भी करते ॥
दूध निकालें लोग छुड़ा कर बच्चे को पीते पीते ।
है उच्छिष्ट अनीति—लब्ध यों योग्य तुम्हारे नहिं दीखे ॥१॥

दहि घृतादिक भी वैसे हैं कारण उनका दूध यथा ।
फूलों को भ्रमरादिक सूंघें वे भी हैं उच्छिष्ट तथा ॥
दीपक तो पतङ्ग कालानल जलते जिस पर कीट सदा ।
त्रिभुवनसूर्य ! आप हो अथवा दीप दिखाना नहीं भला ॥२॥

फल मिष्टान्न अनेक यहां पर उसमें ऐसे एक नहीं ।
मलप्रिया मक्खी ने जिसको आकर प्रभुवर छुआ नहीं ॥
यों अपवित्र पदार्थ अरुचिकर तू पवित्र सब गुणघेरा ।
किस विधि पूजूं क्याहि चढ़ाऊँ चित्त डोलता है मेरा ॥३॥

औ आता हैं ध्यान तुम्हारे क्षुधा तृषा का लेश नहीं ।
नाना रसयुत अन्नपान का अतः प्रयोजन रहा नहीं ॥
नहिं बांछा न विनोद भाव नहिं राग अंश का पता कहीं ।
इससे व्यर्थ चढ़ाना होगा औषधि सम जब रोग नहीं ॥४॥

यदि तुम कहो रत्न वस्त्रादिक भूषण क्यों न चढ़ाते हो ।
अन्य सदृश पावन हैं अर्पण करते क्यों सकुचाते हो ॥
तो तुमने निस्सार समझकर खुशी खुशी उनको त्यागा ।
हो वैराग्य लीन मति स्वामिन् इच्छा का तोड़ा तागा ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



तब क्या तुम्हें चढ़ाऊँ वे ही करूं प्रार्थना ग्रहण करो ।
होगी यह तो प्रगट अज्ञता तब स्वरूप की सोच करो ॥
मुझे धृष्टता दीखे अपनी और अश्रद्धा बहुत बड़ी ।
हेय तथा संत्यक्त वस्तु यदि तुम्हें चढ़ाऊँ घड़ी घड़ी ॥६॥

इससे 'जुगल' हस्त मस्तक पर रखकर नम्रीभूत हुआ ।
भक्ति सहित मैं प्रणमूँ तुमको बार बार गुणलीन हुआ ॥
संस्तुति शक्ति सम्मान करूं औ सावधान हो नित तेरी ।
काय वचन की यह परिणति हो अहो द्रव्यपूजा मेरी ॥७॥

भावभरी इस पूजा से ही होगा आराधन तेरा ।
होगा तुव सामीप्य प्राप्त औ सभी मिटेगा जग फेरा ॥
तुझमें मुझमें भेद रहेगा नहि स्वरूप से तब कोई ।
ज्ञानानन्द कला प्रगटेगी, थी अनादि से जो खोई ॥८॥

卐

# शास्त्र की व्याख्या

शास्त्र का नाम काहे सों कहिये, जिसमें शाश्वतो धर्म, सच्चे गुरु और सच्चे देव का स्वरूप या जीव को सिद्ध होने की महिमा चले । या दर्शनस्थिति ज्ञानस्थिति चारित्रस्थिति धर्म की उत्पत्ति कर्मों की खिपत्ति या जीव की मुक्ति, कलन, चरण, रमण, ॐकार ह्रियंकार ह्रियंकार उवनदिढ मुक्ति दिढ ऐसो त्रिक स्वभाव चले ताको नाम शास्त्र जी कहिये । बहुरि जामें मारण है तारण है बध बन्धन है विदारण है ऐसो कथन चले ताको नाम अशास्त्र कहिये । बहुरि जाके सुनने से या जीव को साहस बंधे सम्यक्त्व की प्राप्ति होय बोध बीज की उत्पत्ति होय ताको नाम शास्त्र जी कहिये ।

अब सूत्र नाम काहे सों कहिये ? जाके श्रवण से या जीव को मन, वचन, काय को एक सूत्र होय ताको नाम सूत्र कहिये । नातर हे भाई मन कहूँ को चले, वचन कहूं को चले, काया जाकी स्थिर नाहीं, ताको सूत्र नाहीं कहिये । धन्य हैं गुरु तारणतरण जिनके नव सूत्र सुवरे व दशमें आत्मीक सूत्र में चौदह ग्रन्थों की रचना करी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



# द्रव्यपूजा और भावपूजा का रहस्य

वचोविग्रह संकोचो द्रव्यपूजा निगद्यते ।
तत्र मानससंकोचो भावपूजा पुरातनैः ॥
( अमितगति आचार्य )

नोटः—श्री आचार्य अमितगति आचार्य-परम्परा में प्रामाणिक एवं उच्च कोटि के आचार्य थे। इतना ही नहीं, आपके द्वारा 'अमितगति श्रावकाचार' आदि की रचना भी हुई है। उसी श्रावकाचार ग्रन्थ में आपने इस श्लोक द्वारा यह स्पष्ट उपदेश किया है कि वचनों द्वारा भगवान के गुणानुवाद करना, स्तुति आरती भक्ति इत्यादि करना ही द्रव्यपूजा है। तथा मनको एकाग्र करके भावों में भगवान के स्वरूप का ध्यान करना भावपूजा है। आचार्य के उपरोक्त श्लोक का भाव और भी अधिक स्पष्ट करने के विचार से ही श्री पं० जुगलकिशोर जी मुख्तार सा० 'युगवीर' ने 'मेरी द्रव्यपूजा' की रचना कविता में की है। अतः तारण समाज को बचनों द्वारा की गई भगवान की स्तुति-पूजा करना, द्रव्यपूजा ही समझना चाहिये और जब जो भाई मन को एकाग्र करके भगवान का ध्यान करें तब भावपूजा की है ऐसा जानना चाहिये। किन्तु इस भाव-पूजा का पूर्ण अधिकारी मुनिवर्ग है और श्रावक उपरोक्त द्रव्य-पूजा का।

हमारे बहुत से तारण समाज वाले भाई ऐसा जानते हैं कि हमारी समाज में तो भाव-पूजा होती है और अष्ट द्रव्य से पूजा करना द्रव्य-पूजा कहलाती है, किन्तु ऐसा मानना ठीक नहीं। श्री अमितगति आचार्य तथा श्री तारण स्वामी के उपदेशानुसार जो हम और आप चौबीस तीर्थङ्करों की स्तुति करते हैं यही उनकी सच्ची द्रव्य-पूजा है। और जब उनका ध्यान करते हैं तब भावपूजा होती है, ऐसा निश्चय करना चाहिये। भगवान की स्तुति करना और उनके गुणानुवाद गाना ही सच्ची निर्दोष द्रव्यपूजा है, क्योंकि बचन वर्गणा पुद्गल द्रव्य है।

—ब्र० गुलाबचन्द ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



# श्री गुरु तारण-स्तोत्र

शुद्ध चिद्रूपतत्वज्ञं, मोक्षमार्गप्रदर्शकम् ।
भक्त्याहं मण्डलाचार्यं वन्दे श्री गुरुतारणम् ॥१॥

धन्या वीरश्री माता, वीर-माता महासती ।
धन्योऽसि त्वं गढाशाह, वन्दे श्री गुरुतारणम् ॥२॥

मार्गशीर्षोत्तमे मासे, सुनक्षत्रे सुमंगले ।
सप्तम्यां शुक्लपक्षे च, वन्दे श्री गुरुतारणम् ॥३॥

जन्मभूरति रम्या सा, नगरी च पुष्पावती ।
गुरुजन्मोत्सवं यत्र, वन्दे श्री गुरुतारणम् ॥४॥

पूर्वजन्मार्जितं ज्ञानं, संस्कारेणात्र जन्मनि ।
बाल्यकालादति प्राज्ञं, वन्दे श्री गुरुतारणम् ॥५॥

पूर्णजीवनवृत्तान्तं, नैव जानामि सज्जन ।
परम्परानुसारेण, वन्दे श्री गुरुतारणम् ॥६॥

श्रूयते श्री गुरोर्दीक्षा, वनं सेमरखेड़िकम् ।
ज्ञानध्यानतपोयुक्तं, वन्दे श्री गुरुतारणम् ॥७॥

निसहो-क्षेत्रमध्ये च वेतवानिकटे खलु ।
अन्ते समाधिसम्प्राप्तं, वन्दे श्री गुरुतारणम् ॥८॥

आत्म-तत्व-रहस्यज्ञं, महामन्यं जगद्गुरुम् ।
प्रचण्ड-धर्मसूरिं तं, वन्दे श्री गुरुतारणम् ॥९॥

ममात्मा हृदयं स्तोत्रं श्रुत्वा स्वामिन् ! ददातु मे ।
शांतिं शांतिं सदा शांतिं, वन्दे श्री गुरुतारणम् ॥१०॥

卐

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



## आरती तारण स्वामी की :—

आरती तारण स्वामी की, कि जय जय जय जिनवाणी की,
गले में समकित की माला, हृदय में भेद-ज्ञान पाला।
धन्य वह मोक्षपंथ वाला, कि महिमामय शिवगामी की ॥टेक॥
निसई, सूखा. सेमरखेड़ी. बजावें देव मधुर भेरी।
सुनो प्रभु! विनय आज मेरी, कि श्री गुरुदेव नमामी की। टेक॥
मुझे इन कर्मों ने घेरा, असाता दूर करो मेरा।
लगाना अब न प्रभू वेरा, विनय सुन अपने प्राणी की ॥टेक॥
आरती चौदह ग्रन्थों की. कि जय जय जय निरग्रन्थों की।
कुँवर जय बोलो संतों की, वेतवा तीर नमामी की ॥टेक॥

## आरती ॐ जय प्रभु जिनदेवा की

ॐ जय प्रभु जिन देवा, तुम विन शरण न दूजा कोई।
हों सब दुःख छेवा, ॐ जय प्रभु जिन देवा ॥१॥
इन्द्र नरेन्द्र फणेन्द्र जु सेवें, चरण कमल थारे।
मुनिजन गुणिजन ऋषिगण सारे, गुण वर्णत हारे ॥२।
समवशरण लक्ष्मी कर मंडित, चतुरानन राजें।
दर्शन करत मिटें भव भव दुःख, सब पातक भाजें। ३॥
तीनों काल खिरै वाणी जिम, मेघझड़ी बरसै।
सुर नर खग जिय जन्तु सारे, सुनकर मन हरषै ॥४॥
घाति अघाति नाश किये तुम, दुःख-दायक भारी।
मुक्ति-रमा के कंथ विराजौ, अविचल पद धारी ॥५॥
दर्शन ज्ञान अनन्त धरो तुम, शिव—सुख के दाता।
सुख शक्ती का पार न पावै, तुम त्रिभुवन त्राता ॥६॥
पतित उधारन नाम तिहारो, गावै जग सारा।
'मधुर" शरण तुमरी गहि लीनी, कीजे भव पारा ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



अष्टमी चतुर्दशी पंचमी आदि पर्वों की

# साधारण मन्दिर-विधि

नोट—★ सर्व सज्जनवृन्द बैठकर ही मन्दिर विधि करें।

★ सबसे पहिले बेदी पर से ममल पाहुड़ ग्रन्थ या और कोई ग्रन्थ विस्तारें, बाद में तत्व पाठ पढ़।

★ ममल पाहुड़ ग्रन्थ में से कोई भी एक फूलना पढ़ना चाहिये।

## तत्व

तत्वं च नंद आनन्द मउ, चेयानंद सहाव।
परम तत्त्व पदविंद मय, नमियो सिद्ध सहाव॥

### गुरु को नमस्कार

गुरु उवएसिउ गुप्तरुइ गुपत न्याय सहकार।
तारणतरण समर्थ मुनी भव संसार निवार॥

### धर्म को नमस्कार

धर्म जु ओता जिनवरिंह अर्थति अर्थ संजोय।
भय विनास भव्य जुप्रु णहु ममल न्यान परलोय॥

卐

## विनती फूलना

[ यह फूलना मिलकर पढ़ना चाहिये ]

देव जी मेरे मन आनन्द भयो गुरु, विनती एक सुनीजे।
भणत विरम्ह तारण जिन उवने, विनती एक सुनीजे॥
हां जू तारण जिन विनती एक सुनीजे॥ टेक॥

तुम अन्मोय भव्य जिय उवने तिन उवएसु कहीजे।
नंद अनंदह चिदानंद जिन, कम्म उवन्न विलीजे॥ टेक॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



चहूं गति भ्रमत दुःख भयो भारी, सुख नहिं कबहूँ पायो।
ऐसे काल तरण जिन उवने, मुक्तिपंथ दरसायो ॥ टेक ॥

काल पंचमों चपल अनिष्ट है, इष्ट दृष्टि नहिं उपज्जे ।
न्याय बलेन इष्ट संजोये, भय खिपिय कम्म गलिज्जे ॥ टेक ॥

संसय सरण नन्त भय भारी, भयह दृष्टिय भमिज्जे ।
भय विनासु तं भव्य उवन्नो, कम्म उवन्न विलिज्जे ॥ टेक ॥

दव्व कम्मु आवर्ण उपज्जय, सल्य संक भय ओतम् ।
ज्ञानावरण ज्ञान तं विलियो भय खिपि सिद्धि संपातम् ॥ टेक ॥

वज्रनराच संहनन जं सहियो, भय विनास सुपयेसम् ।
तं सरीर औदारिक सहियो, खिपिय तरण सुपयेसम् ॥ टेक ॥

चवखु अचक्खुह जं भौ उपजै, गुहजह भौ जु अनन्तु ।
तारण तरण सहावह जिनियो, न्याय दृष्टि विलयंतु ॥ टेक ॥

तारण तरण सहावह विलियो, सल्य संक विलयंतु ।
ज्ञान विज्ञानह ममलसरूवे, भय खिपिय मुक्ति पहुँतु ॥ टेक ॥

[ पश्चात् नीचे लिखी क्रिया करना व पढ़ना चाहिये । ]

आदि में श्री आदिनाथ देव जी भये, अन्त में श्री महावीर देव जी भये । बाईस तीर्थङ्कर मध्यानुगामी भये । चौबीसी को नाम लीजे तो पुण्य की प्राप्ति होय ।

卐

## वर्तमान चौबीसी

श्री ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म प्रभु छठे जिनेश्वर ।
सप्तम तीर्थङ्कर भये हैं सुपारस, चन्द्रप्रभु आठम हैं निवारस ॥
पुष्पदंत शीतल श्रेयांस, वासुपूज्य और विमल अनन्त ।
धर्मनाथ वंदत अविनीश्वर, सोलह कारण शांति जिनेश्वर ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



कुन्थु अरह मल्लि मुनिसुव्रत बीसा, नमि अष्टांग सिद्ध इकबीसा।
नेमिनाथ साहसि गिरि नेमि, सहनशील बाईस परीषह ॥
पारसनाथ तीर्थङ्कर तेईस, वर्द्धमान जिनवर चौबीस।
चार जिनेन्द्र चहूँ दिश गये, बीस सम्मेद शिखर पर गये ॥
आदिनाथ कैलाशें गये, वासुपूज्य चम्पापुर गये।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, पावापुरी वीर जिनराज ॥
दो धवला दो स्यामला वीर, दो जिनवर आरक्त शरीर।
हरे वरण दो ही कुलवन्त, हेमवरण सोला इकवंत ॥
चौबीस तीर्थङ्कर मोक्षे गये, दश कोड़ाकोड़ी काल विल भये।
भये सिद्ध अरु होंय अनंत, जे वंदों चौबीस जिनंद ॥
वंदों तीर्थङ्कर चौबीस, वंदों सिद्ध बसें जगदीस।
वंदों आचारज उवझाय, वंदों साधु गुरुन के पांय ॥

—दोहा—

देव धरम गुरु को नमो नमो सिद्ध शिव क्षेत्र।
विदेह क्षेत्र में जिन नमो, जिनके नाम विशेष ॥

卐

## विदेह क्षेत्र के बीस तीर्थङ्करों के नाम

सीमन्धर स्वामी जिन नमों, मन वच काय हिये में धरों।
युगमन्धर स्वामी जुग पायें, नाम लेत पातक छय जायें ॥
बाहु सुबाहु स्वामी धर धीर, श्री सुजाति स्वामी महावीर।
स्वयंप्रभू स्वामी जी को ध्यान ऋषभानन जी कहें बखान ॥
अनन्तवीर सूरप्रभु सोय, विशालकीर्ति जग कीरत होय।
वज्रधर स्वामी चन्द्रधर नेम, चंद्रबाहु कहिये जिन णेम ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



भुजंगम ईश्वर जग के ईश, नेमीश्वर जू को विनय करीश ।
वीर्यसेन वीरज बलवान, महाभद्र जो कहिये जान ॥
देवयश स्वामी श्री परमेश, अजित वीर सम्पूर्ण नरेश ।
विद्यमान बीसो पढ़ो चितलाय, बाढ़े धर्म पाप छय जायँ ॥

ऐसे चौबीस तीर्थङ्कर जिन्होंने आठ कर्म आठ मद अठारह दोषों को नष्ट कर निर्वाण पद प्राप्त किया, ऐसे जिनेन्द्र देव तिनको बारम्बार नमस्कार हो । ऐसे बीस तीर्थङ्कर विदेह क्षेत्र में सदा सर्वदा विराजमान तिनको नमस्कार कीजे तो पुण्य की प्राप्ति होय ।

卐

## विनय-बैठक

अब कहा दर्शावत हैं कि शास्त्र सूत्र सिद्धान्त नाम अर्थ जो शास्त्रनाम काहे सों कहिये ! जिनमें सच्चे देव सच्चे गुरु और सच्चे धर्म की महिमा चले । कैसे हैं सच्चे देव गुरु धर्म और शास्त्र ?

सांचो देव सोई, जामें दोष को न लेश कोई ।
सांचो गुरु वही, जाके उर कछु की न चाह है ॥
सही धर्म वही, जहां करुणा प्रधान कही ।
ग्रन्थ सही वही, जहां आदि अन्त एक सो निरवाह है ॥
यही जग रतनचार, ज्ञान ही में परख यार ।
सांचे लीजे झूठे डार, नरभव को लाहो है ॥
मनुष्य विवेक बिना, पशु के समान गिना ।
यातें यह बात ठीक, पारणी सलाह है ॥

卐

— गाथा —

सूत्रं तं जिन उक्तं तं श्रुतं शुद्ध भाव संकलियं ।
असूत्रं नव पोछंति सूत्र शशि हाव शुद्ध मप्पाणं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



अब सिद्धान्त नाम अर्थ जी जामें सिद्धों के आदि अंत नय लिए कथन चले, चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नव नारायण, नव प्रतिनारायण, नव बलभद्र ऐसें त्रेसठ शलाका के पुरुषों का कथन चले या उनके गुणों की महिमा चले ताको नाम सिद्धान्त कहिये। अब यथा नामा तथा गुणाः, गुण शोभित नाम, नाम शोभित गुण। धन्य भगवान, तुम्हारे नाम भी वंदनीक और गुण भी वंदनीक।

दोहा—

नाम लेत पातक कटें, विघन विनासे जांय।
तीन लोक जिन नाम को, महिमा वरणो न जाय ॥१॥

गुण अनतमय परमपद, श्री जिनवर भगवान।
ज्ञेय लक्ष है ज्ञान में, अचल महा शिवथान ॥२॥

अगम हतो गुरुगम्य बिना, गुरुगम दई लखाय।
लक्ष कोस की गैल है, पल में पहुँचे जाय ॥३॥

विघन-विनाशन भयहरन, भयभंजन गुरुतार।
तिनके नाम जो लेत ही, संकट कटत अपार ॥४॥

कठिन काल विकराल में, मिथ्या मत रहो छाय।
सम्यकभान उदोत कर, शिवमग दियो बताय ॥५॥

परम्परा यह धर्म है, केवल—भाषित सोय।
ताकी नय वाणी कथित, मिथ्या मत को खोय ॥६॥

धन्य धन्य जिनधर्म को, सब धर्मों में सार।
ताको पंचमकाल में, दरसायो गुरु तार ॥७॥

धन्य धन्य गुरु तारजी, तारण तुमरो नाम।
जो नर तुमको जपत है, सिद्ध होत सब काम ॥८॥

जो कदापि गुरु तार कौ, नहिं होतो अवतार।
मिथ्या भव सागर विषैं, कैसे लहते पार ॥९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



अब शास्त्र जी को नाम कहा, दर्शावत हैं—श्री ममलपाहुड नाम ग्रन्थ जी श्री कहिये शोभनीक मंगलीक जयवन्ता कल्याणकारी महासुखकारो, श्री महावीर स्वामी के मुखारविंद कण्ठ कमल की बाणी, इस पंचमकाल में श्री गुरु तारण तरण महाराज ने दरसाई जिनको तीन सु ज्ञान जगे—मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान को अकुर उत्पन्न भयो ता विषें पंच मतें जगीं जिनमें चौदह ग्रन्थों की रचना करी। जय बोलिये, जय नमोस्तु ॥

卐

## आशीर्वाद स्तवन

उत्पन्न रंज प्रवेशगमनं छद्मस्थ सुभाव सुक्खेन सुक्खेन ये दुक्खेन विलयन्ति। जय बोलिये, जय नमोस्तु।

दोहा—

अप्प समुच्चय जानिये ऋषि यति मुनि अनगार।
पद पस्सय कर्महि खिपय सिद्ध होंय तिहिवार ॥

सिद्ध जोय देवों के दाता गुरु के उपदेश धर्म के निश्चें तारण के परचें, ऐसे जो व्यासी हजार वर्षे जाँय आगे मुक्ति के सुख विलसें। चतुर्थ काल के आदि में पद्म पुङ्ग राजा के पद्मनाभि तीर्थङ्कर देव अन्मोयं स्वयं स्वयं मुक्ति गामिनो सुक्खेन कालखिपियं। श्री जिनेन्द्र के वचन सत्य हैं, ध्रुव हैं, प्रमाण हैं। जय बोलिये, जय नमोस्तु।

卐

## अबलबली

जय गुरु अबल बली उवन कमल, वयन जिन ध्रुव तेरे।
अन्मोय शुद्धं रंज रमण, चेत रे मण मेरे ॥
जय तार तरण समय तारण, न्यान ध्यान विवंदे।
आयरण चरण शुद्धं, सर्वन्य देव गुरु पाये ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



जय नंदा आनंद, चेयानंद सहज परमानंदे ।
परमाण ध्यान स्वयं, विमल तीर्थङ्कर नाम वंदे ॥
जय कलन कमल, उवन रमण रंज रमण राये ।
जय देव दीपति स्वयं, दीपति मुकति रमण राये ॥

卐

## गुरु तोहि ध्यावत सुःख अनन्ता

स्वामी तारण जिनदेवा ।

उत्पन्न रंज रमण नंद जय मुक्ति दायक देवा ॥
काऊण णमुक्कारं जिनवर बसहस्स बड्ढमाणस्स ।
दंसणमग्गं बोच्छामि, जहाकम्मं समासेण ॥
सव्वण्हु सव्वदंसी, णिम्मोहा वीयराय परमेट्ठी ।
वन्दित्तु तिजगवन्दा अरहंता भव्य जीवेहिं ॥
सपरा जङ्गमदेहा, दंसणणाणेण सुद्धचरणार्णं ।
णिग्गंथ वीयराया जिणमग्गे एरिया पडिमा ॥
मणुयभवे पंचिंदिय, जीवट्ठाणेसु होइ चउदसमे ।
एदे गुणगणजुत्तो गुणमारूढ़ो हवई अरुहो ॥
णाणमयं अप्पाणं उबलद्धं जेण झड़ियकम्मेण ।
चइऊण य परदव्वं णमो णमो तस्स देव्वस्य ॥
जिणबिम्बं णाणमयं संजमसुद्ध सु वीयरायं च ।
जं देइ दिक्खसिक्खा कम्मक्खय कारणं सुद्धा ॥
संसग्ग कम्मखिवणं सारं तीलोय न्यान बिन्यानं ।
रुचियं ममलसहावं संसारे तरण मुक्तिगमणं च ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



गुणवय तवसम पड़िमा दाणं जलगालणं अणत्थमियं ।
दंसण णाण चरित्तं किरिया तेवण्ण सावया भणिया ।।

卐

# आरती श्री गुरुदेव की

आरती श्री गुरुदेव तुम्हारो, देव तुम्हारो श्री गुरुदेव तुम्हारी ।।टेक।।
तारण तरण विरद के धारी, आरति श्री गुरुदेव तुम्हारी ।।
जन्म नगर पुष्पावति प्यारी, आरति श्री गुरुदेव तुम्हारी ।
सेमरखेड़ी में दीक्षा धारी, आरति श्री गुरुदेव तुम्हारी ।।
निसई साधु समाधि तुम्हारी, आरति श्री गुरुदेव तुम्हारी ।
वेत्रवती सरिता के पारी, आरति श्री गुरुदेव तुम्हारी ।।
धन्य धन्य तुम अतिशय धारी, आरति श्री गुरुदेव तुम्हारी ।
चौदह ग्रन्थ रचे सुखकारी, आरति श्री गुरुदेव तुम्हारी ।।
भवि जन गण के तुम हितकारी, आरति श्री गुरुदेव तुम्हारी ।
तुम गुरुदेव भवोदधि तारी, आरति श्री गुरुदेव तुम्हारी ।।
जय जय परम धर्म दातारी, आरति श्री गुरुदेव तुम्हारी ।
विनय करें श्रावक पद धारी, आरति श्री गुरुदेव तुम्हारी ।।

आरती हो जाने पर चन्दन परसाद हो चुकने पर तत्व पढ़ा जाय व जाते समय सब भाईयों को खड़े होकर सामूहिक रूप से एक साथ कोई स्तुति या विनती पढ़ना चाहिये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



# वार्षिक मेला व मेला तिलक प्रतिष्ठा के अवसर पर

## मंदिर-विधि

कार्यक्रम:—

१—तत्व पढ़कर श्री ममल पाहुड़ जी ग्रन्थ में से कोई भी एक फूलना पढ़ना।

२—झंझा भक्ति पूर्वक ५ भजन मय आयरण फूलना के करना चाहिये। आयरण फूलना के प्रारम्भ में दीपक प्रज्वलित कर लेना।

३—तत्पश्चात् सावधान होकर सामूहिक रूप से तत्व पढ़कर अवसर के अनुरूप जिस फूलना का अथवा श्री छद्मस्थ वाणी जी ग्रन्थ का या तीन बत्तीसी जी में से जिनका स्थाप करना हो—उनकी गाथायें तिलक समाप्ति होने तक के दिनों की अवधि के अनुसार विभाजन करके क्रमशः पढ़ना चाहिए। तदुपरांत—

४—धर्मोपदेश की विधि निम्न प्रकार पूर्ण करें—साधारण मंदिर विधि पेज १५ से २२ तक में से।

(१) आदि में श्री आदिनाथ देव जी भये, वर्तमान चौबीसी पढ़ना।

(२) विदेह क्षेत्र के बीस तीर्थङ्करों की नामावली पढ़ना। सीमन्धर स्वामी जिन, आदि।

(३) विनय बैठक।

(४) शास्त्र जी की व्याख्या।

५—जिन ग्रन्थों की गाथायें स्थाप में पढ़ी गई हों, उनका अर्थ, प्रवचन व विशेष रूप से विशेष वक्ता द्वारा उपदेश।

६—तीनों आशीर्वाद पढ़ना। तत्पश्चात् —

७—अप्प समुच्चय का अंतिम आशीर्वाद मय सिद्ध जाय देवों के दाता गुरु के उपदेश धर्म के निश्चय आदि.....पूरा भाषा पाठ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



८—अवलवली पढ़ना चाहिए। तत्पश्चात्—

९—आरती झंझा भक्ति पूर्वक करें।

नोट—श्री तिलक महोत्सव के दिन आरती की बोली उमंग पूर्वक यथाशक्ति बोलना चाहिए। यही एक प्रणाली ऐसी है कि जिसके द्वारा तीर्थ क्षेत्रों की और उनमें स्थापित धर्म संस्थाओं की अथवा श्री चैत्यालयों जी की धर्मप्रभावना अक्षुण्ण रूप से होती रहती है। —ब्र० गुलाबचन्द।

१०—अंत में—उत्पन्न रंज प्रवेश गमनं छद्मस्थ सुभाव सुक्खेन सुक्खेन ये दुःखेन काल विलयन्ती। जय बोलिये, जय नमोस्तु।

११- समय हो तो पुरुष वर्ग व महिलाओं के द्वारा एक या दो भजन पढ़े जावें।

तत्पश्चात्—

चंदन तिलक तथा प्रसाद व्रत भंडार जिन महानुभावों की ओर से आया हो सूचना रूप से उनका नाम ठाम कहकर उनके शुभ भावों की वृद्धि हो ऐसा आशीर्वादात्मक भाव शब्दावलि द्वारा प्रगट किया जाना चाहिये। तत्पश्चात् चंदन तिलक लगाना व प्रसाद वितरण करना। ध्यान रहे कि चन्दन कटोरो की बोली बोलने का भी विशेष महत्व अपनी समाज में है।

अंत में तत्व पढ़कर कार्य विसर्जन।

卐

# दशलाक्षणी-पर्व का कार्यक्रम

१—प्रात.काल प्रभाती या प्रभातफेरी।

२—स्नान आदि के बाद अपने अपने पाठ, स्वाध्याय करना।

३—दैनिक पूजा-पृष्ठ क्रमांक ९ से १२ तक। बाद इसी के साथ दशलाक्षण धर्म व सोलह कारण भावना तथा तीन बत्तीसी या तारण त्रिवेणी का पाठ सामूहिक रूप से पढ़ना चाहिये।

४—श्री ममल पाहुड़ जी ग्रन्थ से १ फूलना पढ़ना चाहिए।

५—झंझा भक्ति पूर्वक ५ भजन।

६—तीन बत्तीसी जी ग्रन्थ व धर्माचरण फूलना का स्थाप वृहद् धर्मोपदेश पूर्वक मंदिर विधि आगे लिखे मूजब करना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5256



# दशलक्षण पाठ

卐

सोरठा—पीडैं दुष्ट अनेक, बांध मार बहुविधि करैं ।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजे पीतमा ॥

[ चौपाई मिश्रित गीताछन्द ]

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह भव जस पर भव सुखदाई ।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुनको औगुन कहै अयानो ॥
कहि है अयानो वस्तु छीने, बांध मार बहुबिधि करै ।
घरतैं निकारै तन विदारै, बैर जो न तहां धरै ॥
जे करम पूरव किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा ।
अति क्रोध अगनि बुझाय प्रानी, साम्य जल ले सीयरा ॥१।

मान महाविषरूप करहि नीच-गति जगतमें ।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा ॥
उत्तम मार्दव गुन मन माना, मान करनको कौन ठिकाना ।
वस्यो निगोदमाहिं तैं आया, दमरी रूंकन भाग विकाया ॥
रूकन विकाया भागबशतैं, देव इकइन्द्री भया ।
उत्तम मुआ चाण्डाल हूआ, भूप कीडोंमें गया ॥
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करै जलबुदबुदा ।
करि विनय बहुगुन बड़े जनकी, ज्ञानका पावै उदा ॥२॥

कपट न कीजै कोय, चोरनके पुर ना बसै ।
सरल सुभावी होय ताके घर बहु सम्पदा ।
उत्तम आर्जव नीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी ।
मनमें हो सो बचन उचरिये, बचन होय सो तनसौं करिये ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



करिये सरल तिहुं जोग अपने, देख निर्मल आरसी ।
मुख करै जैसा लखे तैसा, कपट प्रीति अंगारसी ॥
नहिं लहै लछमी अधिक छलकरि करमबंधविशेषता ।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता ॥३॥

कठिन बचन मत बोल, परनिन्दा अरु झूठ तज ।
सांच जवाहर खोल, सतवादी जगमें सुखी ॥
उत्तम सत्य वरत पालोजै, पर विश्वासघात नहिं कीजै ।
सांचे झूठे मानुष देखे आपन पूत स्वपास न पेखे ॥
पेखे तिहायत पुरुष सांचेको, दरव सब दीजिये ।
मुनिराज श्रावक की प्रतिष्ठा, सांच गुन लख लीजिये ॥
ऊँचे सिंहासन बैठ वसुनृप, धरम का भूपति भया ।
वच झूठसेती नरक पहुँचा, सुरग में नारद गया ॥४॥

धरि हिरदै सन्तोष, करहु तपस्या देह सों ।
शौच सदा निरदोष, धरम बड़ो संसार में ॥
उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना ।
आशा फांस महा दुखदानी, सुख पावै सन्तोषी प्रानी ॥
प्रानी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञान ध्यान प्रभावतैं ।
नित गंगजमुन समुद्र न्हाये, अशुचिदोष सुभातें ॥
ऊपर अमल मल भर्यो भीतर, कौन विध घट शुचि कहैं ।
बहु देह मैली सुगुनथैली, शौचगुन साधू लहैं ॥५॥

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्री मन वश करो ।
संयम रतन संभाल, विषय चोर बहु फिरत हैं ॥
उत्तम संजम गहु मन मेरे, भवभवके भाजैं अघ तेरे ।
सुरग नरक पशुगति में नाहीं, आलसहरन करन सुखठाहीं ॥
ठाहीं पृथ्वी जल आग मारुत, रूख त्रस करुना धरो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो ॥
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुल्यो जगकीचमें ।
इक घरी मत बिसरो करो नित, आव जममुखबीचमें ॥६॥

तप चाहैं सुरराय, करमशिखरको बज्र है ।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करै निज सकति-सम ॥

उत्तम तप शिवमार्ग बखाना, करमशिखर को बज्र समाना ।
बस्यो अनादि निगोद मझारा, भूविकलत्रय पशुतन धारा ॥
धारा मनुषतन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता ।
श्रीजैनवाणी तत्त्वज्ञानी भई विषमपयोगता ॥
अति महा दुरलभ त्याग विषय कषाय जो तप आदरैं ।
नरभव अनूपम कनकवर पर, मणिमयी कलसा धरैं ॥७॥

दान चार परकार, चार संघको दीजिये ।
धन बिजुली उनहार, नरभव लाहो लीजिये ॥

उत्तमत्याग कह्यो जगतारा, औषधि शास्त्र अभय आहारा ।
निहचे रागद्वेष निरवारैं, ज्ञाता दोनों दान संभारैं ॥
दान संभारैं कूपजलसम दरब घर में परिनया ।
निजहाथ दीजे साथ लीजे, खाया खोया बह गया ॥
धनि साधु शास्त्र अभयदिवैया, त्याग राग विरोधकों ।
बिन दान श्रावक साध दोनों, लहै नाहीं बोधकों ॥८॥

परिग्रह चौबिस भेद, त्याग करैं मुनिराज जी ।
तिसनाभाव उच्छेद, घटती जान घटाइये ॥

उत्तम आकिंचन गुण जानों परिग्रहचिन्ता दुख ही मानों ।
फांस तनकसी तन में सालै, चाह लंगोटी की दुख भालै ॥
भालै न समता सुख कभी नर बिना मुनि मुद्रा धरैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



धनि नगनपर तन-नगन ठाड़े सुर असुर पायन परैं ॥
घरमांहि तिसना जो घटावैं, रुचि नहीं संसार सौं ।
बहु धन बुराहू भला कहिये लीन पर उपगार सौं ॥९॥

शीलबाड़ि नौ राख, ब्रह्मभाव अन्तर लखो ।
करि दोनों अभिलाष करहु सफल नरभव सदा ॥

उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ ॥
सहैं बानवरषा बहु सूरे, टिकें न नैन बान लखि कूरे ॥
कूरे त्रियाके अशुचितनमें, काम रोगी रति करें ।
बहु मृतक सड़हिं, मसान माहीं, काक ज्यों चोंचें भरें ।
संसार में विषबेल नारी, तज गये जोगीश्वरा ।
'द्यानत' धरमदशपैंडि चढ़िके, शिवमहल में पग धरा ॥१०॥

दशलक्षण वंदों सदा मन बांछित फलदाय ।
करहुँ आरती भारती हम पर होउ सहाय ॥

卐

## पं० भूधरदास कृत दशलक्षण धर्म

दश लक्षण वंदों सदा, मनवांछित फलदाय ।
करहुँ आरती भारती हम पर होउ सहाय ॥
अब दश लक्षण धर्म के, कहूँ मूल गुण अंग ।
जे नित श्री आनन्द मुनि, पालत हैं सरवंग ॥

— चौपाई —

विना दोष ही जो दुख देंय, समरथ होय सकल सहलेंय ।
क्रोध कषाय न उपजे जहां, उत्तम क्षमा कहावे तहां ॥१॥
आठ महामद पाय अनूप, निरभिमान वरतै मृदु रूप ।
मान कषाय जहां नहिं होय, मार्दव धर्म नाम है सोय ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



जो मन चिंतै सो मुख कहै, करै कायसों कारज बहै ।
मायाचार न उर पाइये, आर्जव धर्म यही गाइये ॥३॥
बोले बचन स्वपर हितकार, सत्य स्वरूप सदा उनहार ।
मिथ्या वचन कहै नहिं मूल, सोई सत्य धर्म तरु मूल ॥४॥
पर कामिन पर द्रव्य संहार, सो विरक्त वरतै छल छांड ।
अन्तर शुद्ध होय सरवंग, सोई शौच धर्म को अंग ॥५॥
मन समेत जे इन्द्री पंच, इनको शिथिल करै नहिं रंच ।
त्रस थावर की रक्षा होय, संयम धर्म बखाना सोय ॥६॥
ख्याति लाभ पूजा सब छंड, पंच करण को दीजै दंड ।
सो तप धर्म कहो जगसार, अनसनादि बारह परकार ॥७॥
संयम धारी व्रती प्रधान, दीजै चहुं विधि उत्तम दान ।
तथा दुष्ट विकलप परिहार, त्याग धर्म बहु सुख दातार ॥८॥
बाहिज परिग्रह को परित्याग, अन्तर ममता रहै न लाग ।
आकिंचन यह धर्म महान, शिव पद दायक निश्चै जान ।९॥
बड़ी नार जननी सम जानो, लघु पुत्री सम बहिन बखानो ।
तज बिकार मन वरते जेह, ब्रह्मचर्य पद पूरण येह ॥१०॥

इति दश लक्षण धर्म

卐

## समुच्चय-जयमाल-दशधर्म की

दोह-दशलच्छन बंदों सदा, मन वांछित फलदाय ।
करहुँ आरती भारती, हम पर होहु सहाय ॥

उत्तम छिमा-जहां मन होई, अंतर बाहिर शत्रु न कोई ॥१॥
उत्तम मार्दव-विनय प्रकासै, नाना भेद ज्ञान सब भासै ॥२॥
उत्तम आर्जव-कपट मिटावै, दुरगति टाल सुगति उपजावै ॥३॥
उत्तम सत्य-वचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



उत्तम शौच-लोभ परिहारी, संतोषी गुण रतन भंडारी ॥५॥
उत्तम संजम-पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै, लह साता ॥६॥
उत्तम तप-निरवांछित पालै; सो नर करम शत्रु को टालैं ॥७॥
उत्तम त्याग-करै जो कोई, भोग भूमि-सुर-शिव सुख होई ॥८॥
उत्तम आकिंचन-व्रत धारैं, परम समाधि दशा विस्तारैं ॥९॥

दोहा-करै करम की निरजरा, भव पींजरा विनाशि ।
अजर अमर पद को लहै 'द्यानत' सुख की राशि ॥

卐

## सोलह कारण भावना

— दोहा —

सोलह कारण भावना, भावें मुनि आनन्द ।
जिनकौ नाम स्वरूप कछु, लिखूं सकल सुख कंद ॥

चौपाई—

आठ दोष मद आठ मलीन, छै अनायत शठता तीन ।
ये पच्चीस मल वर्जित होय, दर्शन-शुद्धि कहावै सोय ॥१॥
रत्नत्रय धारी मुनिराय, दर्शन ज्ञान चरित समुदाय ।
इनकी विनय विषैं परवीन, दुतिय भावना सो अमलीन ॥२॥
शील भाव धारैं समचित्त, सहस अठारह अंग समेत ।
अतीचार नहिं लागे जहां, तृतीय भावना कहिये तहां ॥३॥
आगम कथित अर्थ अवधार, यथाशक्ति निज बुधि अनुसार ।
करै निरन्तर ज्ञान अभ्यास, तुरिय भावना कहिये तासु ॥४॥

दोहा -

धर्मी धर्म के फल विषै, वरतैं प्रीति विशेष ।
यही भावना पंचमी, लिखी जिनागम देख ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



चौपाई—

औषधि अभय ज्ञान आहार, महादान यह चार प्रकार ।
शक्ति समान सदा निरबहे, छठी भावना धारक बहै ॥६॥

अनशन आदि मुक्ति दातार, उत्तम तप बारह परकार ।
बल अनुसार करै जो कोय, सोई सातमी भावना होय ॥७॥

यती वर्ग को कारण पाय, विघन होत जो करे सहाय ।
साधुसमाधि कहावै सोय, यही भावना अष्टम होय ॥८॥

दश विधि साधु जिनागम कहे, यथा पीडित रोगादिक गहै ।
तिनकी जो सेवा सत्कार, यही भावना नौमी सार ॥९॥

परम-पूज्य-आतम अर्हन्त, अतुल अनंत चतुष्टयवंत ।
तिनकी थुति नित पूजाभाव, दशमभावना भवजलनाव ॥१०॥

जिनवर कथित अर्थ अवधार, रचना करै अनेक प्रकार ।
आचारज की भक्ति विधान, एकादशम भावना जान ॥११॥

विद्यादायक विद्यालीन, गुणगरिष्ट पाठक परवीन ।
तिनके चरण सदा चित रहे, बहुश्रुतभक्ति बारमी यहे ॥१२॥

भगवत-भाषित अर्थ अनूप, गणधर गूंथत ग्रन्थ सरूप ।
तहाँ भक्ति बरतै अमलान, प्रवचनभक्ति तेरमी जान ॥१३॥

षट आवश्यक क्रिया विधान, इनकी करहैं न कबहूँ हान ।
सावधान वरतै थिर—चित्त, सो चौदहमी परम पवित्र ॥१४॥

कर जप तप पूजा व्रतभाव, प्रगट करे जिनधर्म प्रभाव ।
सोई मारग—परभावना, यही पंचदशमी भावना ॥१५॥

चार प्रकार संघ सो प्रीति, राखे गाय--बच्छ की रीति ।
यही सोलमी सब सुखदाय, प्रवचन वात्सल्य अभिधाय ॥१६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



दोहा—

सोलह कारण भावना, परम पुण्य को खेत ।
भिन्न २ अरु सोलहों, तीर्थंकर पद हेत ॥

बंध प्रकृति जिनमत विषें, कहीं एक सौ बीस ।
सौ सत्रह मिथ्यात में, बांधत हों निश दीस ॥

तीर्थङ्कर आहार दुक, तीन प्रकृति ये जान ।
इनको बंध मिथ्यात में, कहो नहीं भगवान ॥

तीन लोक तिहुं काल में, पूजा सम नहिं पुन्न ।
गृहवासी के प्रातहिं, जिन पूजा दरशन ॥

यह थोड़ो सो कथन है, लेहु बहुत कर मान ।
नित उठ पूजा कीजिये, यही बड़ो परमान ॥

卐

# सोलह कारण भावना की जयमाल

दोहा—

षोडश कारण गुण करैं, हरैं चतुर गति वास ।
पाप पुण्य सब नाशकैं, ज्ञान भानु परकास ॥१॥

— चौपाई —

दरस विशुद्धि धरैं जो कोई, ताको आवागमन न होई ।
विनय महा धारैं जो प्रानी, शिव वनिता की सखी बखानी ॥२॥

शील सदा दिढ जो नर पालैं, सौ औरन की आपद टालैं ।
ज्ञानाभ्यास करैं मन माहीं, ताके मोह महातम नाहीं ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



जो संवेग भाव विस्तारै, सुरग मुकति पद आप निहारै ।
दान देय मन हरष विशेषै, इह भव जस परभव सुख देखै ॥४॥

जो तप तपै खिपैं अभिलाषा, चूरै करम शिखर गुरु भाषा ।
साधुसमाधि सदा मन लावै, तिहुँजग भोग भोगि शिव जावै ॥५॥

निशि दिन वैयावृत्य करैया, सो निहचै भव नीर तरैया ।
जो अरहंत भक्ति मन आनै, सो जन विषय कषाय न जानै ॥६॥

जो आचारज भक्ति करै हैं, सो निरमल आचार धरै हैं ।
बहु श्रुतवंत भक्ति जो करहिं, सो नर संपूरन श्रुति धरहिं ॥७॥

प्रबचनभक्ति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानन्द दाता ।
षट आवश्यक नित जो साधै, सोही रत्नत्रय आराधैं ॥८॥

धर्मप्रभाव करे जो ज्ञानी, तिन शिव मारग रीति पिछानी ।
वात्सल्य अंग सदा जो ध्यावें, सो तीर्थंकर पदवी पावें ॥९॥

दोहा—

ऐसी सोलह भावना, सहित धरै व्रत जोय ।
देव इन्द्र नर वंद्य पद, धानत शिव पद होय ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

# तारण-त्रिवेणी

## श्री पंडित पूजा जी

ओंकरस्य ऊर्धस्य, ऊर्ध्व सद्भाव शाश्वतं ।
विंद स्थानेन तिष्ठते, ज्ञानेन शाश्वतं ध्रुव ॥१॥

ओम् रहा है और रहेगा, सतत उच्च सद्भावागार ।
परमब्रह्म, आनन्द ओम् है ओम् अमूर्त, शून्य आकार ॥
ओम् पंच परमेष्ठी मंडित, ओम् ऊर्ध्व गति का धारी ।
केवल-ज्ञान-निकुंज ओम् है, ओम् अमर, ध्रुव, अविकारी ॥१॥

निश्चय नय जानंते, शुद्ध तत्व विधीयते ।
ममात्मा गुणं शुद्धं, नमस्कारं शाश्वतं ध्रुवं ॥२॥

जिन्हें वस्तु के सत्, चित् ज्ञायक, या निश्चय नय का है ज्ञान ।
वही अनुभवी, पारखि करते, निज स्वरूप की सत् पहिचान ॥
अन्तस्तल - आसीन आत्मा, ही है अपना देव ललाम ।
आत्मद्रव्य का अनुभव करना, ही है सच्चा, अचल प्रणाम ॥२॥

ॐ नमः विंदते योगो, सिद्धं भवत् शाश्वतं ।
पंडितो सोपि जानंते, देवपूजा विधीयते ॥३॥

योगीजन नित ओम् नमः का, शुद्ध ध्यान ही धरते हैं ।
'सोऽहं' पद पर चढ़कर ही वे, प्राप्त सिद्ध-पद करते हैं ॥
'ओम् नमः' जपते जपते जो, निज स्वरूप में रम जाता ।
वही देव पूजा करता है, पंडित वह ही कहलाता ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



ह्रीकारं ज्ञान उत्पन्नं, ओंकरं च विंदते ।
अरहं सर्वज्ञ उक्तं च, अचक्षु दर्शन दृष्टते ॥४॥

जगतपूज्य अरहन्त जिनेश्वर, जिसका देते नव उपदेश ।
साम्य दृष्टि सर्वज्ञ सुनाते, जिसका घर घर में सन्देश ॥
जो अचक्षु-दर्शन-चख गोचर, जो चित चमत्कार सम्पन्न ।
ओंकार की शुद्ध बन्दना, करती वही ज्ञान उत्पन्न ॥४॥

मति श्रुतश्च संपूर्णं, ज्ञानं पंचमयं ध्रुवं ।
पंडितो सोपि जानंते, ज्ञानं शास्त्र स पूजते ॥५॥

मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय से, ज्ञान करें जिसमें कल्लोल ।
पंच ज्ञान केवल भी जिसमें, छोड़ रहा नित ज्योति अलोल ॥
ऐसे आत्म-शास्त्र को ही नित, जो पूजे विवेक-शिरमौर ।
वही सत्य पंडित प्रज्ञाधर, वही ज्ञान-धन का है ठौर ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रियंकारं, दर्शनं च ज्ञानं ध्रुवं ।
देवं गुरुं श्रुतं चरणं, धर्मं सद्भावशाश्वतं ॥६॥

ह्रीं श्रीं के रूप मनोहर, करते जिसमें विमल प्रकाश ।
अमर ज्ञान, दर्शन का है जो, एक मात्रतम दिव्य निवास ॥
वही परम उत्कृष्ट ओम् हो, है त्रिभुवन मंडल में सार ।
वही देव, गुरु, शास्त्र आचरण, वही धर्म सद्भावागार ॥६॥

वीर्य अँकूरण शुद्धं, त्रैलोकं लोकितं ध्रुवं ।
रत्नत्रयं मयं शुद्धं, पंडितो गुण पूजते ॥७॥

केवलज्ञान-मुकुर में जिसको, तीनों लोक दिखाते हैं ।
जिसके स्वाभाविक बल-जल का, निधि-दल थाह न पाते हैं ॥
रत्नत्रय की सुर-सरिता से, शुद्ध हुआ जो द्रव्य महान् ।
उसी आत्मरूपी सद्गुरु को, करते हैं पूजन विद्वान ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



देवं गुरुं श्रुतं वंदे, धर्मशुद्धं च विंदते ।
तिअर्थ अर्थलोकं च, स्नानं च शुद्धं जलं ।।८।।

आतम ही है देव निरंजन, आतम ही सद्गुरु भाई ।
आतम शास्त्र, धर्म आतम ही, तीर्थ आत्म ही सुखदाई ।।
आत्म-मनन ही है रत्नत्रय, पूरित अवगाहन सुखधाम ।
ऐसे देव, शास्त्र, सद्गुरुवर, धर्म तीर्थ को सतत प्रणाम ।।८।।

चेतना लक्षणो धर्मो, चेतियंत सदा बुधै ।
ध्यानस्य जलं शुद्धं, ज्ञानं स्नान पंडितः ।।९।।

चिदानन्द, ध्रुव, शुद्ध आत्मा, की चेतनता है पहिचान ।
बुद्धिमान जन नित्य निरन्तर, धरते हैं उस ही का ध्यान ।।
नदी, सरोवर में करते हैं, अवगाहन जड़ अज्ञानी ।
आत्म-ज्ञान-जल से प्रक्षालन, करते सत्पंडित ज्ञानी ।।९।।

शुद्धतत्वं च वेदंते, त्रिभुवनस् ज्ञानेश्वरं ।
ज्ञानं मयं जलं शुद्धं, स्नानं ज्ञान पंडितः ।।१०।।

हस्तमलकवत् जिसको तीनों, भुवन, चराचर प्राणी हैं ।
उसी ब्रह्म को ध्याते हैं बस, जो बुधजन, विज्ञानी हैं ।।
शुद्ध आत्म है स्वच्छ सरोवर, कल कल करता जिसमें ज्ञान ।
इसी ज्ञान रूपी जल में नित, पंडितजन करते (हैं) स्नान ।।१०।।

सम्यक्तस्य जलं शुद्धं, संपूर्ण सर पूरितं ।
स्नानं पिवत गणधरनं, ज्ञानं सरनंतं ध्रुवं ।।११।।

सम्यग्दर्शन रूपी जिसमें, भरा हुआ है नीर अगम्य ।
ऐसा है वह परम ब्रह्म का, भव्यो ! सरवर अविचल रम्य ।।
महा मुनीश्वर श्री गणधर जी, जिनकी शरण अनेकों ज्ञान ।
इस सर में ही अवगाहन कर, करते इसका ही जल पान ।।११।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



शुद्धात्मा चेतनाभावं, शुद्ध दृष्टि समं ध्रुवं ।
शुद्धभाव स्थिरीभूत्वा, ज्ञानं स्नान पंडितः ॥१२॥

शुद्ध आत्मा है, हे भव्यो ! सत् चैतन्य भाव का पुँज ।
सम्यग्दर्शन से आभूषित, मोक्ष प्रदाता, ज्ञान-निकुंज ॥
निश्चल मन से इसी तत्व को, शुद्ध गुणों का करना ध्यान ।
पंडित वृन्दों का बस यह ही, प्रक्षालन है सत्य महान् ॥१२॥

प्रक्षालितं त्रति मिथ्यात्वं, शल्यं त्रियं निकंदनं ।
कुज्ञान राग दोषं च, प्रक्षालितं अशुभ भावना ॥१३॥

धुल जाते इस ज्ञान-नीर से, तीनों ही मिथ्यात्व समूल ।
तीनों शल्यों को विनष्ट कर, ज्ञान बना देता यह धूल ॥
अशुभ भावनायें भी सारी, इस जल से धुल जाती हैं ।
राग द्वेष, कुज्ञान-कालिमा, पास न रहने पाती हैं ॥१३॥

कषायं चत्रु अनंतानं, पुण्य पाप प्रक्षालितं ।
प्रक्षालितं कर्म दुष्टं च, ज्ञानं स्नान पंडितः ॥१४॥

पुण्य पाप दोनों रिपुओं को, क्षय कर देता है यह नीर ।
मलिन कषायें छिप जाती हैं, देख रश्मि से इसके तीर ॥
कर्म-नृपति की सेना को भी, कर देता यह जल-भट चूर्ण ।
ऐसा है यह ज्ञान-उदक का, अवगाहन मंगल परिपूर्ण ॥१४॥

प्रक्षालितं मनश्चपलं, त्रिविधि कर्म प्रक्षालिते ।
पंडितो वस्त्र संयुक्तं, आभरनं भूषण क्रियते ॥१५॥

चंचल मन भी ज्ञान-नीर से, प्रक्षालित हो जाता है ।
द्रव्य, भाव, नोकर्म-यूथ भी, वहां न फिर दिख पाता है ॥
सम्यक् विधि से परम ब्रह्म को, जब उज्ज्वल कर देता नीर ।
तब ज्ञानीजन धारण करते, हैं अपने आभूषण चीर ॥१५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



वस्त्रं च धर्म सद्भावं, आभरणं रत्नत्रयं ।
मुद्रिका सम मुद्रस्य, मुकुटं ज्ञानमयं ध्रुवं ॥१६॥

शुद्ध आत्म-सद्भाव-धर्म ही, है पंडित का उज्वल चीर ।
झिलमिल करता रत्नत्रय ही, है उसका भूषण गंभीर ॥
समताभावमयी मुद्रा ही, है उसकी मुद्रिका अनूप ॥
अविनाशी, शिव, सत्य ज्ञान ही, उसका ध्रुव किरीट चिद्रूप ॥१६॥

दृष्टतं शुद्ध दृष्टीं च, मिथ्यादृष्टि च त्यक्तयं ।
असत्यं अनृतं न दृष्टन्ते, अचेत दृष्टि न दीयते ॥१७॥

जो ज्ञानी-जन करते रहते, ज्ञान-नीर से अवगाहन ।
परमब्रह्म उनका दर्पण-वत, हो जाता निर्मल पावन ॥
मिथ्यादर्शन को क्षय कर वे, शुद्धदृष्टि हो जाते हैं ।
असत, अचेतन, अनृतदृष्टि से, फिर न दुःख वे पाते हैं ॥१७॥

दृष्टतं शुद्ध समयं च, सम्यक्त्वं शुद्ध ध्रुवं ।
ज्ञानं मयं च संपूर्ण, ममलदृष्टि सदा बुधैः ॥१८॥

ज्ञान-नीर के अवगाहन से, असद् भाव मिट जाता है ।
परप शुद्ध सम्यक्त्व मात्र ही, फिर हिय में दिख पाता है ॥
शुद्ध बुद्ध ही दिखते हैं फिर, आंखों में प्रत्येक घड़ी ।
दिखता है बस वही ज्ञान की, अन्तर में मच रही झड़ी ॥१८॥

लोकमूढ़ं न दृष्टंते देव, पाखंड न दृष्टते ।
अनायतन मद अष्टं च, शंकादि अष्ट दृष्टते ॥१९॥

ज्ञान नीर से मिट जाता है, तीन मूढ़ताओं का ताप ।
अष्ट मदों का मन-मन्दिर में, फिर न शेष रहता सन्ताप ॥
छह अनायतन डरते हैं फिर, नहीं हृदय में आते हैं ।
अष्ट दोष भी तस्कर नाईं, देख इन्हें छिप जाते हैं ॥१९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



दृष्टतं शुद्ध पदं सार्धं, दर्शन मल विमुक्तयं ।
ज्ञानं मयं शुद्ध सम्यक्त्वं, पंडितो दृष्टि सदा बुधै ॥२०॥

सप्त तत्व का जो निदान है, अगम, अगोचर, मनभावन ।
उसी 'ओम्' से मंडित दिखता, बुधजन को चेतन पावन ॥
आत्मदेश में जहाँ कहीं भी, जाते उसके मन लोचन ।
उन्हें, वहीं दिखता है निर्मल, सम्यग्दर्शन दुःख-मोचन ॥२०॥

वेदका अग्रस्थिरश्चैव वेदतं निरग्रंथं ध्रुवं ।
त्रैलोक्यं समयं शुद्धं, वेद वेदंति पंडितः ॥२१॥

जो पंडित कहलाता है, या होता जो वेदान्त प्रवीण ।
अग्र ज्ञान को कर उसमें वह, सतत रहा करता तल्लीन ॥
तीन लोक का ज्ञायक है जो, ग्रन्थहीन, ध्रुव अविनाशी ।
उसी आत्म का अनुभव करता, नितप्रति ज्ञान-नगर-वासी ॥२१॥

उच्चारण ऊर्ध शुद्धं च, शुद्ध तत्वं च भावना ।
पंडितो पूज आराध्यं, जिन समयं च पूजतं ॥२२॥

ऊर्ध्व-प्रणायक प्रणव मन्त्र का, करना मुख से उच्चारण ।
अपने विमल हृदय-मन्दिर में, करना शुद्ध भाव धारण ॥
यही एक पंडित-पूजा है, पूज्यनीय शिव, सुखदाई ।
शुद्ध आत्मा का पूजन हो, है जिन-पूजन हे भाई ॥२२॥

पूजतं च जिनं उक्तं, पंडितो पूजतो सदा ।
पूजतं शुद्ध सार्धं च, मुक्ति गमनं च कारणं ॥२३॥

आत्मद्रव्य की पूजा करता, बन जो जिन-वच अनुगामी ।
वही एक जग में करता है, पंडितपूजा शिवगामी ॥
शुद्ध आत्मा ही भव-जल से, तरने का बस ! है साधन ।
मुक्ति चाहते हो यदि तुम तो, करो इसी का आराधन ॥२३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



अदेवं अज्ञान मूढंच, अगुरुं अपूज्य पूजनं ।
मिथ्यात्वं सकलजानंते, पूजा संसार भाजनं ॥२४॥

'देव' किन्तु देवत्वहीन जो वे 'अदेव' कहलाते हैं ।
वही 'अगुरु' जड़ जो गुरु बनकर, झूठा जाल बिछाते हैं ॥
ऐसे इन 'अदेव' 'अगुरों' की, पूजा है मिथ्यात्व महान ।
जो इनकी पूजा करते वे, भव भव में फिरते अज्ञान ॥२४॥

तेनाह पूज शुद्धं च, शुद्ध तत्व प्रकाशकं ।
पंडितो बंदना पूजा, मुक्तिगमनं न संशयः ॥२५॥

सप्त तत्व के पुंजों का निज, करता है जो प्रतिपादन ।
वही ब्रह्म है पूज्य, विज्ञगण ! करो उसी का आराधन ॥
अगुरु, अदेवादिक की पूजा, आवागमन बढ़ाती है ।
आत्म-अर्चना, आत्म-वंदना, मुक्ति-नगर पहुंचाती है ॥२५॥

प्रति इन्द्र प्रति पूर्णस्य, शुद्धात्मा शुद्ध भावना ।
शुद्धार्थं शुद्ध समयं च, प्रति इन्द्रं शुद्ध दृष्टितं ॥२६॥

इन्द्र कौन ? निज चेतन ही तो, सत्य इन्द्र भव्यो स्वयमेव ।
वही एक है शुद्ध भावना, वही परम देवों का देव ॥
वही ब्रह्म, शुचि शुद्ध अर्थ है, वही समय निर्मल, पावन ।
उसी शुद्ध चिद्रूप देव का, करो चिंतवन मनभावन ॥२६॥

दाताऽरु दान शुद्धं च, पूजा आचरण संयुतं ।
शुद्धसम्यक्त्वहृदयं यस्य, स्थिरं शुद्ध भावना ॥२७॥

जिस जन के हृदयस्थल में है, सम्यग्दर्शन रत्न महान ।
अपने ही में आप लीन जो, जिसे न सपने में पर ध्यान ॥
आत्मद्रव्य का पूजन करता, कर जो नव आदर सत्कार ।
परमब्रह्म को वही ज्ञान का, देता महा दान दातार ॥२७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



शुद्ध दृष्टी च दृष्टंते, सार्धं ज्ञानमयं ध्रुवं ।
शुद्धतत्वं च आराध्यं, बंदना पूजा विधीयते ॥२८॥

चिदानंद के ज्ञान-गुणों के, अनुभव में होना तल्लीन ।
यही एक वन्दन है सच्चा, नहीं वन्दना और प्रवीण ॥
शुद्ध आत्मा का निर्मल मन से, करना सच्चा आराधन ।
यही एक बस पूजा सच्ची, यही सत्य बस अभिवादन ॥२८॥

संघस्य चत्रु संघस्य, भावना शुद्धात्मनां ।
समयसारस्य शुद्धस्य, जिनोक्तं सार्धं ध्रुवं ॥२९॥

मुनी, आर्यिका श्रावक-दम्पति, भी क्यों करें इतर चर्चा ?
निजानन्द-रत होकर वे भी, करें आत्म की ही अर्चा ॥
शुद्ध आतमा ही बस जग में, सारभूत है हे भाई !
जिनप्रभु कहते, आत्मध्यान ही, एक मात्र है सुखदाई ॥२९॥

सार्धं च सप्ततत्वानं, दर्वकाया पदार्थकं ।
चेतनाशुद्धध्रुवं निश्चय, उक्तं च केवलं जिनं ॥३०॥

सप्त तत्व को देखो चाहे, छह द्रव्यों का छानों कुंज ।
नौ पदार्थ, पंचास्तिकाय का, चाहे सतत बिखेरो पुँज ॥
इन सब में पर जीव-तत्व ही, सार पाओगे विज्ञानो ।
आत्मतत्व ही सारभूत है, कहती यह ही जिनवाणी ॥३०॥

मिथ्या तिक्त त्रतियं च, कुज्ञान त्रति तिक्तयं ।
शुद्ध भाव शुद्ध समयं च, सार्धं भव्य लोकयः ॥३१॥

दर्शन मोह तीन हैं भव्यो, छोड़ो उनसे अपना नेह ।
कुमति, कुश्रुत, कुअवधि, कुज्ञानों, से भी हीन करो हिय-गेह ॥
निर्मल भावों से तुम निशिदिन, धरो आत्म का निश्चल ध्यान ।
आत्म-ध्यान ही भव-सागर के, तरने को है पोत महान ॥३१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by.Sarayu Trust/eGangotri



एतत् सम्यक्त्वपूज्यस्य, पूजा पूज्य समाचरेत् ।
मुक्तिश्रियं पदं शुद्धं, व्यवहारनिश्चयशाश्वतं ॥३२॥

निर्मल कर मन, वचन काय को, तीर्थ-स्वरूपिणि त्रिवेणी ।
करो आत्म की पूजा विज्ञो, यही एक भव-जल-तरणी ॥
शुद्ध आत्मा का पूजन ही, पूजनीय है सुखदाई ।
युगल नयों से सिद्ध यही है, यही एक शिव-पथ भाई ॥३२॥

॥ इति समाप्तम् ॥

卐

# श्री मालारोहण जी

ॐकार वेदंति शुद्धात्म तत्वं, प्रणमामि नित्यं तत्वार्थ साधं ।
ज्ञानं मयं सम्यकदर्शनोत्थं, सम्यक्त्वचरणं चैतन्यरूपं ॥१॥

ओङ्कार रूपी वेदान्त ही है, रे तत्व निर्मल शुद्धात्मा का ।
ओंकार रत्नत्रय की मंजूषा, ओंकार ही द्वार परमात्मा का ॥
ओंकार ही सार तत्वार्थ का है, ओंकार चैतन्य प्रतिमाभिराम ।
ओंकार में विश्व, ओंकार जगमें, ओंकार को नित्य मेरा प्रणाम ॥१॥

नमामि भक्तं श्रीवीरनाथं, नं तं चतुष्टं तं व्यक्त रूवं ।
मालागुणं बोच्छं तत्वप्रबोधं, नमाम्यहं केवलि नंत सिद्धं ॥२॥

जोऽनंत चतुष्टय के निकेतन, जिनके न ढिंग अष्ट कर्मारि बसते ।
ऐसे जिनेश्वर श्री वीर प्रभु को, मेरा युगल पाणि से हो नमस्ते ॥
मैं केवली, सिद्ध, परमेष्ठियों को, भी भक्ति से आज मस्तक नवाता ।
जो सप्त तत्वों की है प्रकाशक, उस मालिका के गुण आज गाता ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



कायाप्रमाणं त्वं ब्रह्मरूपं, निरंजनं चेतनलक्षणत्वं ।
भावे अनेत्वं जे ज्ञानरूपं, ते शुद्ध दृष्टी सम्यक्त्व वीर्यं ॥३॥

इस ब्रह्मरूपी निज आत्मा का, काया बराबर स्वछन्द तन है ।
मल से विनिर्मुक्त है यह घनानंद, चैतन्य-संयुक्त तारनतरन है ॥
जो इस निरंजन शुद्धात्मा के, शंकादि तजकर बनते पुजारी ।
वे ही सफल हैं, निज आत्मबल में, वे ही सुजन हैं सम्यक्त्वधारी ॥३॥

संसार दुक्खं जे नर विरक्तं, ते समय शुद्धं जिन उक्त दृष्टं ।
मिथ्यात्व मद मोह रागादि खंडं, ते शुद्ध दृष्टी तत्वार्थ साधं ॥४॥

श्री जैन वाणी में मुख कमल से, कहते गिरा सिद्ध परमात्मा हैं ।
संसार दुःखों से जो परे हैं, भव्यो वही जीव शुद्धात्मा हैं ॥
मिथ्यात्व, मद, मोह रागादिकों से, जिनने किये हैं रिपु नाश भारी ।
वे ही सुजन हैं तत्वार्थ ज्ञाता, वे ही पुरुष हैं सम्यक्त्वधारी ॥४॥

शल्यं त्रियं चित्त निरोध नेत्वं, जिन उक्त वाणी हृदि चेतनेत्वं ।
मिथ्याति देवं गुरु धर्मदूरं, शुद्धं स्वरूपं तत्वार्थ साधं ॥५॥

श्री वीर प्रभु के अमृत-वचन का, जिनसे हृदय में जलता दिया है ।
मिथ्यादि त्रय शल्य का रोग जिनने, सम्यक्त्व उपचार से क्षय किया है ॥
मिथ्यात्व-मय देव, गुरु धर्म से जो, रहते सदा हैं परे आत्म-ध्यानी ।
वे ही पुरुष हैं शुद्धात्म प्रतिमूर्ति, सम्यक्त्व धारी तत्वार्थ-ज्ञानी ॥५॥

जे मुक्ति सुक्खं नर कोपि साधं, सम्यक्त्व शुद्धं ते नर घरेस्वं ।
रागादयो पुन्य पापाय दूरं, ममात्मा, स्वभावं ध्रुव शुद्ध दृष्टं ॥६॥

मैं सिद्ध हूँ, मुक्तिरमणी बिहारी, है मोक्ष मेरी यही चारु काया ।
मद मोह मल पुण्य रागादिकों की, पड़ती न मुझ पर कभी भूल छाया ॥
सम्यक्त्व से पूर्ण जिनके हृदय हैं, जो चाहते मोक्ष किस रोज पावें ।
वे स्वावलम्बी इसी भांति अपने, हृदयस्थ परमात्मा को रिझावें ॥६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



श्री केवलं ज्ञान विलोकतत्वं, शुद्धं प्रकाशं शुद्धात्म तत्वं ।
सम्यक्त्व ज्ञानं चर नंत सौख्यं, तत्वार्थ सार्धं त्वं दर्शनेत्वं ॥७॥

ज्ञानारसी में जिस तत्व का रे ! दिखता सतत है प्रतिबिम्ब प्यारा ।
जिसके वदन से प्रतिपल बिखरता रहता प्रभा-पुंज शुचि शुद्ध न्यारा ॥
सम्यक्त्व की पूर्ण प्रतिमूर्ति है जो, हैं जो अनूपम आनन्द-राशी ।
तत्वार्थ के सार उस आत्मा को, देखो, विलोको,- मोक्षाभिलाषी ॥७॥

सम्यकत्व शुद्धं हृदयं समस्तं, तस्य गुणमाला गुथतस्य वीर्यं ।
देवाधिदेवं गुरु ग्रन्थ मुक्तं, धर्मं अहिंसा क्षमा उत्तमध्यं ॥८॥

सम्यक्त्व की चारु चन्द्रावली से, सबके हृदय-हार हैं जगमगाते ।
पुण्यात्मा, वीरवर जीव ही पर, उसके गुणों को कर व्यक्त पाते ॥
जिनराज ही देव हैं ज्ञानियों के, गुरु ग्रन्थ-विनिर्मुक्त, कल्याणकारी ।
है धर्म परमोच्च उत्तम अहिंसा, जिसमें विहँसती क्षमा शक्तिधारी ॥८॥

तत्वार्थं सार्धं त्वं दर्शनेत्वं, मलं विमुक्तं सम्यक्त्व शुद्धं ।
ज्ञानं गुणं चरणस्य शुद्धस्य वीर्यं, नमामि नित्यं शुद्धात्म तत्वं ॥९॥

तत्वार्थ के सार को तुम विलोको, जो शुद्ध सम्यक्त्व का बन्धु ! प्याला ।
परिपूर्ण जो शुद्धतम ज्ञान से है, जो है अतुल शक्ति चारित्र वाला ॥
यह सार प्यारा शुद्धात्मा है, चिर सुख सदन का अनुपम सु साधन ।
ऐसे अमोलक विज्ञानघन को, मैं नित्य करता सहस्राभिवादन ॥९॥

जे सप्त तत्वं षट दर्व युक्तं, पदार्थ काया गुण चेतनेत्वं ।
विश्वं प्रकाशं तत्वान वेदं, श्रुत देव देवं शुद्धात्म तत्वं ॥१०॥

जो सप्त तत्वों को व्यक्त करता, षट द्रव्य जिसको हस्तामलक हैं ।
पंचास्तिकाया औ नौ पदारथ, जिसमें निरन्तर देते झलक हैं ॥
चैतन्यता से है जो विभूषित, त्रिभुवन-तली को जो जगमगाता ।
श्रुत-ज्ञानरूपी उस आत्मा में हो; रत रह, करो आत्म-कल्याण भ्राता ॥१०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5256



देवं गुरुं शास्त्र गुणान नेत्वं, सिद्धं गुणं सोलाकारणेत्वं ।
धर्मं गुणं दर्शन ज्ञान चरणं, मालाय गुथतं गुणसत्स्वरूपं ॥११॥

सत् देव सत् शास्त्र सत् साधुजन में, श्रद्धा करो नित्य सम्यक्त्वधारी ।
मुक्तिपथ सिद्धों का नित मनन कर, ध्यावो परम भावनायें सुखारी ॥
शुचि, शुद्ध रत्नत्रय-मालिका से, अपने अमोलक हृदय को सजाओ ।
शिव पंथ जिनधर्म को ही समझकर, उसके निरन्तर, सतत गीत गाओ ॥११॥

पड़माय ग्यारा तत्वान पेषं, व्रत्तान शीलं तप दान चित्तं ।
सम्यक्त्व शुद्धं ज्ञानं चरित्रं, सुदर्शनं शुद्ध मलं विमुक्तं ॥१२॥

एकादश स्थान में आचरण कर, कर्मारि पर जय करो प्राप्त भारी ।
पंचाणुव्रत पाल भव भव सुधारो, एकाग्र हो तप तपो तापहारी ॥
दो दान सत्पात्र दल को चतुर्भांति, निज आत्म की ज्योति को जगमगाओ ।
पावन करो शील सुर-वारि से गेह, सम्यक्त्वनिधि प्राप्त कर मोक्ष पाओ ॥१२॥

मूलं गुणं पालंत जोव शुद्धं, शुद्धं मयं निर्मल धारयेत्वं ।
ज्ञानं मयं शुद्ध धरंत चित्तं, ते शुद्ध दृष्टो शुद्धात्मतत्वं ॥१३॥

वसु मूलगुण को पालन किये से, रे ! जीव होता है शुद्ध, सुन्दर ।
पुण्याधियों को इससे उचित है, धारण करें वे यह व्रत-पुरन्दर ॥
जो ज्ञानसागर इस आचरण से, यह देव-दुर्लभ जीवन सजाते ।
वे वीर नर ही हैं शुद्ध दृष्टी, शुद्धात्म के तत्व वे ही कहाते ॥१३॥

शंकाद्य दोषं मद मान मुक्तं, मूढं त्रियं मिथ्या माया न दृष्टं ।
अनाय षट्कर्म मल पंचबीसं, त्यक्तस्य ज्ञानो मल कर्ममुक्तं ॥१४॥

शंकादि वसु दोष, मानादि मद को, जिसके हृदय में कुछ थल नहीं है ।
त्रय मूढ़ता, षट अनायतन की, जिस पर न पड़ती छाया कहीं है ॥
उपरोक्त पच्चीस मल-वैरियों पर, जिसने विजय प्राप्त की भव्य भारी ।
वह कर्म के पाश से छूटता है, बनता वही मुक्ति-रमणी-विहारी ॥१४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



शुद्धं प्रकाशं शुद्धात्मतत्वं, समस्त संकल्प विकल्प मुक्तं ।
रत्नत्रयालंकृत सत्स्वरूपं, तत्वार्थसार्थं बहुभक्तियुक्तं ।।१५।।

शुद्धात्मा-तत्व का भव्य जीवो, है शुद्ध, सित, सौम्य, निर्मल प्रकाश ।
संकल्प आदिक का क्षोभ उसमें, करता नहीं रंच भी है निवास ।।
शुद्धात्मा का शुद्ध स्वरूप, है रत्नत्रय से सज्जित सुखारी ।
तत्वार्थ का सार भी बस यही है, भव्यो बनो आत्म के तुम पुजारी ।।१५।।

जे धर्म लीना गुण चेतनेत्वं, ते दुःख हीना जिनसुद्धदृष्टी ।
संप्रोय तत्वं सोई ज्ञान रूपं, व्रजंति मोक्षं क्षणमेक एत्वं ।।१६।।

शुद्धात्मा के चैतन्य गुण में, जो नर निरन्तर लवलीन रहते ।
वे विज्ञ ही हैं, जिन शुद्ध दृष्टी, संसार दुख धार में वे न बहते ।।
जीवादि तत्वों का ज्ञान करके, होते स्वरूपस्थ वे आत्मध्यानी ।
कर्मारि-दल का विध्वंस करके, वरते वही वे शिवा-सी भवानी ।।१६।।

जे शुद्ध दृष्टी सम्यक्त्वं शुद्धं, माला गुणं कंठ हृदय अरुलितं ।
तत्वार्थ सार्धं च करोति नेत्वं, संसार मुक्त शिव सौख्य वोयँ ।।१७

जो शुद्ध दृष्टी शुद्धात्म-प्रेमी, नित पालते हैं सम्यक्त्व पावन ।
अपने हृदयस्थल पर धारते हैं, जो यह गुणों की माला सुहावन ।।
वे भव्य जन ही पीते निरन्तर, तत्वार्थ के सार का चारु प्याला ।
संसार-सागर से पार होकर, पाते वही जीव चिर सौख्य-शाला ।।१७।।

ज्ञानं गुणं माल सुनिर्मलेत्वं, संक्षेपगुथितं तुव गुण अनन्तं ।
रत्नत्रियालंकृत सस्स्वरूपं, तत्वार्थ सार्ध कथितं जिनेन्द्रैः ।।१८।।

शुद्धात्मा की गुणमालिका में, वाणी अगोचर है पुष्प भाई ।
संक्षेप में ही, पर पुष्प चुन चुन, यह दिव्य माला मैंने बनाई ।।
आगम, पुराणों से तुम सुनोगे, बस एक ही वाक्य परमात्मा का ।
रत्नत्रयाच्छन्न है भव्य जीवो, शशि-सा सुउक्षण शुद्धात्मा का ।।१८।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



श्रेनीय पृच्छंति श्री वीरनाथं, मालाश्रियं मागंत नेहचक्रं ।
धरणेन्द्र इन्द्र गन्धर्व जक्षं, नरनाह चक्रं विद्या धरेत्वं ॥१९॥

श्री वीर प्रभु से श्रेणिक नृपति ने, पूछा सभा में मस्तक नवाकर ।
इस मालिक को त्रिभुवन तली पर, किसने विलोका कहो तो गुणागर ?
क्या इन्द्र, धरणेन्द्र, गन्धर्व ने भी, देखी कभी नाथ यह दिव्यमाला ?
या यक्ष, चक्रेश, विद्याधरों ने, पाया कभी नाथ यह मुक्ति-प्याला ॥१९॥

किं दिप्त रतनं बहुवे अनन्तं, किं धन अनंतं बहुभेय युक्तं ।
किं त्यक्त राज्यं बनवासलेत्वं, किं तत्व वेत्वं बहुवे अनंतं ।।२०॥

जिसके भवन में हीरे जवाहिर, या द्रव्य की लग रही राशि भारी ।
ऐसे कुबेरों ने भी प्रभो क्या, देखी कभी माल यह सौख्यकारी ॥
या राज्य को त्याग जोगी बने जो, उनने विलोकी यह माल स्वामी ।
या सप्त तत्वों के पंडितों ने, देखी गुणावलि यह मोक्षगामी ।।२०॥

श्री वीरनायं उक्तं च शुद्धं, श्रुणु श्रेण राजा माला गुणार्थं ।
किं रत्न किं अर्थ किं राजनार्थ, किं तत्व वेत्वं नवि माल दृष्टं ॥२१॥

बोले जिनेश्वर श्री मुख-कमल से 'श्रेणिक सुनो मालिका की कहानी ।
इस आत्म-गुण की सुमनावली के, दर्शन सहज में न हों प्राप्त ज्ञानी ॥
ना तो कभी रत्नधन-धारियों ने, श्रेणिक सुनो मालिका यह निहारी ।
ना मालिका को उनने विलोका, जो मात्र थे तत्व के ज्ञानधारी ॥२१॥

किं रत्न कार्यं बहुविहि अनंतं, किं अर्थ अर्थ नहि कोपि कार्यं ।
किं राज चक्रं किं काम रूपं, किं तत्व वेत्वं बिन शुद्ध दृष्टि ॥२२॥

"इस माल के दर्शनों में न तो भूप, रत्नादि पत्थर ही काम आवें ।
ना सार्वभौमों के राज्य या धन, हो इस गुणावली को देख पावें ॥
ना तो इसे देख तत्वज्ञ पाये, ना कामदेवों से दृग-सुखारी !
दर्शन वही कर सके मालिका का, थे जो सुनो शुद्धतम दृष्टिधारी ॥२२॥"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



जे इन्द्र धरणेन्द्र गंधर्व यक्षं, नाना प्रकारं बहुविह अनंतं ।
तेऽनंत प्रकारं बहु भेय कृत्वं, माला न दृष्टं कथित जिनेन्द्रैः ।।२३।।

"श्रेणिक ! सुनो वास्तविक गूढ़ यह है, जो पूर्णतम है सम्यक्त्वधारी ।
केवल वही पुण्यशाली सुजन ही, नृप ! धर सके मालिका यह सुखारी ।।
जो इंद्र, धरणेन्द्र, गन्धर्व, यक्षादि, नाना तरह के तुमने बताये ।
वे स्वप्न में भी कभी भूल राजन् ! यह दिव्य माला नहीं देख पाये ।।२३।।

जे शुद्ध दृष्टी सम्यक्त्व युक्तं, जिन उक्त सत्यं सु तत्वार्थ सार्धं ।
आशा भय लोभ स्नेह त्यक्तं, ते माल दृष्टं हृदय कंठ रुलितं ।।२४।।

जो स्याद्वादज्ञ, सम्यक्त्व-सम्पन्न, शुचि, शुद्धदृष्टी, निज आत्मध्यानी ।
तत्वार्थ के सार को जानते नित्य, ध्याते पवित्र-पावनी जैन वाणी ।।
आशा, भय, स्नेह और लोभ से जो, बिलकुल अछूते हैं स्वात्मचारी ।
वे ही हृदय कण्ठ में नित पहनते, है आत्म-गुणमाल यह सौख्यकारी ।।२४।।

जिनस्य उक्तं जे शुद्ध दृष्टी, सम्यक्त्वधारी बहुगुण समृद्धिम् ।
ते माल दृष्टं हृदय कंठ रुलितं, मुक्ती प्रवेशं कथितं जिनेन्द्रैः ।।२५।।

"जिन-उक्त-तत्वों को जानते हैं, जो पूर्ण विधि से सम्यक्त्वधारी ।
आत्म-समाधि-सा मिल चुका है, जिनको समुज्वल-तम रत्नभारी ।।
उनके हृदय-कंठ पर ही निरन्तर, किल्लोल करतीं ये माल ज्ञानी !
वे ही पुरुष मुक्ति में राज्य करते, कहती जगतपूज्य जिनराज वाणी ।।२५।।

सम्यक्त्व शुद्धं मिथ्या विरक्तं, लाज भयं गारव जेवि त्यक्तं ।
ते माल दृष्टं हृदय कंठ रुलितं, मुक्तस्य गामी जिनदेव कथितं ।।२६।।

'मिथ्यात्व को सर्वथा त्याग कर जो, नर हो चुके हैं सम्यक्त्व धारी ।
जिनके हृदय लाज, भय से रहित हैं, जिनने किये नष्ट मद अष्ट भारी ।।
उनकी हृदय-सेज हो भव्य जीवो ! इस मालिका की क्रीड़ास्थली है ।
जिनदेव कहते उनके रमण को, ही बस खुलीं शिवनगर की गली हैं ।।२६।।"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



जे दर्शनं ज्ञान चारित्र शुद्धं, मिथ्यात्व रागादि असत्यं च त्यक्तं ।
ते माल दृष्टं हृदयकंठ रुलितं, सम्यक्त्व शुद्धं कर्म विमुक्तं ॥२७॥

शुचि, शुद्ध दर्शन, ज्ञानाचरण से, जिनके हृदय में मची है दिवाली ।
मिथ्यात्व, मद, झूठ, रागादि के हेतु, जिनके न उर में कहीं ठौर खाली ॥
उनके हृदय कंठ पर ही निरन्तर, ये माल मनहर लटकती रही हैं ।
वे ही सुजन हैं जिन शुद्ध दृष्टी, रिप कर्म से मुक्ति पाते वही हैं ॥२७॥

पदस्थ पिंडस्थ रूपस्थ चित्तं, रूपा अतीतं जे ध्यान युक्तं ।
आर्तं च रौद्रं मद मान त्यक्तं, ते माल दृष्टं हृदय कंठ रुलितं ॥२८॥

पादस्थ, पिण्डस्थ, रूपस्थ, निर्मूर्त, इन ध्यान-कुंजों के जो बिहारी ।
मद-मान-से शत्रुओं के गढ़ों पर जिनने विजय प्राप्त की भव्य भारी ॥
जिनके न तो रौद्र ही पास जाता, जिनको न ध्यानार्त की गंध आती ।
ऐसे सुजन-पुञ्जों के हृदय ही, यह आत्मगुण-मालिका है सजाती ॥२८॥

आज्ञा सुवेदं उपशम धरेत्वं, क्षायिकं शुद्धं जिन उक्त साधं ।
मिथ्या त्रिभेदं मल राग खंडं, ते माल दृष्टं हृदय कंठ रुलितं ॥२९॥

जो श्रेष्ठतम नर वेदक व उपशम, सम्यक्त्व के हैं शुचि शुद्ध धारी ।
मिथ्यात्व से हीन, है प्राप्त जिनको, सम्यक्त्व क्षायिक-सा रत्न भारी ॥
मद राग से जो रहित सर्वथा हैं, जो जानते, जिन कथित तत्व पावन ।
वे ही हृदयथल पर देखते हैं, नित राजती, मालिका यह सुहावन ॥२९॥

जे चेतना लक्षणो चेतनेत्वं, अचेतं विनासो असत्यं च त्यक्तं ।
जिन उक्त सत्यं सु तत्वं प्रकाशं, ते माल दृष्टं हृदय कंठ रुलितं ॥३०॥

चैतन्य-लक्षण-मय आत्मा के, हैं जो निराकुल, निश्चल पुजारी ।
अनृत, अचेतन, विनाशीक, पर में, जिनको नहीं रंच ममता दुखारी ॥
जिनके हृदय में जिन उक्त तत्वों, की नित्य जलती सतप्त ज्वाला ।
उनके हृदय-कंठ को ही जगाती, श्रेणिक सुनो ! यह अध्यात्म-माला ॥३०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



जे शुद्ध बुद्धस्य गुण सस्य रूपं, रागादि दोषं मल पुञ्ज त्यक्तं ।
धर्म प्रकाशं मुक्ति प्रवेशं, ते माल दृष्टं हृदय कंठ रुलितं ॥३१॥

जिन शुद्ध जीवों को दिख चुकी है, निज आत्मकी माधुरी मूर्ति बांकी ।
जिनके दृगों के निकट झूलता है, प्रतिरूप सुमुक्ति मुक्ति की दिव्य झांकी ॥
जो रागद्वेषादि मल से परे हैं, जो धर्म की कान्ति को जगमगाते ।
इस मालिका को वही शुद्धदृष्टा, अपने हृदय पर पड़ी देख पाते ॥३१॥

जे सिद्ध नं तं मुक्ति प्रवेशं, शुद्धं स्वरूपं गुण माल ग्रहितं ।
जे केवि भव्यात्म सम्यक्त्व शुद्धं, ते जात मोक्षं कथितं जिनेन्द्रैः ॥३२॥

अब तक गये विश्व से जीव जितने, चोला पहिन मुक्ति का सिद्धशाला ।
अपने हृदय पर सजा ले गये हैं, वे सब यही आत्म-गुण पुष्पमाला ॥
इस ही तरह शुद्ध सम्यक्त्व धरकर, जो माल धरते यह सौख्यकारी ।
कहते जिनेश्वर वे मुक्त होकर, बनते परमब्रह्म आनन्दधारी ॥३२॥

॥ इति समाप्तम् ॥

卐

## श्री कमल बत्तीसी जी

तत्वं च परम तत्वं, परमप्पा परम भाव दरसीए ।
परम जिनं परमिस्ठी, नमामिहं परम देवदेवस्य ॥१॥

तत्वों में जो तत्व परम हैं, भाव परम दरशाते ।
परम जितेन्द्रिय परमेष्ठी जो, परमेश्वर कहलाते ॥
सब देवों में देव परम जो, वीतराग, सुख-साधन ।
ऐसे श्री अरहन्त प्रभू को, करता मैं अभिवादन ॥१॥

जिन बयनं सद्दहनं, कमलसिरि कमल भाव उववन्नं ।
आर्जव भाव सजुत्तं, ईर्ज स्वभाव मुक्ति गमन च ॥२॥

पतितोद्धारक जिनवाणी के, होते जो श्रद्धानी ।
आत्म-कमल से प्रगटे, उनके हो भव-भाव-भवानी ॥
आत्मबोध का हो जाना ही, आकुलता जाना है ॥
आकुलता का जाना ही बस, शिवसुख को पाना है ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In.Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



अन्मोयं न्यान सहावं, रयनं रयन स्वरूपममल न्यानस्य ।
ममलं ममल सहावं, न्यानं अन्मोय सिद्धि संपत्ति ॥३॥

ज्ञान-स्वभाव है, स्वत्व सनातन, आत्म तत्व का प्यारा ।
रत्नत्रय से है प्रदीप्त वह, रत्न प्रखरतम न्यारा ॥
कर्मों से निर्मुक्त, सदा वह, शुचि स्वभाव का धारी ।
जो उसमें नित रत रहते वे, पाते शिव सुखकारी ॥३॥

जि न य ति मिथ्या भावं, अनृत असत्य पर्जाव गलियं च ।
गलियं कुन्यान सुभावं, विलयं कम्मान तिविह जोएन ॥४॥

आत्म-मनन से मिथ्यादर्शन, ईंधन-सा जल जाता ।
अनृत, अचेतन असत् पदों में, मोह न फिर रह पाता ॥
'सोऽहं' की ध्वनि क्षय कर देती, कुज्ञानों की टोली ।
आत्म—चिन्तवन रच देता है, अष्ट मलों की होली ॥४॥

नन्द आनन्दं रूवं, चेयन आनन्द पर्जाव गलियं च ।
न्यानेन न्यान अन्मोयं, अन्मोयं न्यान कम्म षिपनं च ॥५॥

परम ब्रह्म में जब रत होता, मन—मधुकर - मतवाला ।
सत्, चित्, आनन्द से भर उठता, तब अन्तर का प्याला ॥
ज्ञानी चेतन, ज्ञान-कुण्ड में, खाता फिर फिर गोते ।
मलिन भाव और सबल कर्म तब, पल पल में क्षय होते ॥५॥

कम्म सहावं षिपनं, उत्पन्न षिपिय दिष्टि सद्भावं ।
चेयन रूव संजुत्तं, गलियं विलयंति कम्म बंधानं ॥६॥

कर्मों का नश्वर स्वभाव है, जब वे खिर जाते हैं ।
क्षायिक—सम्यग्दर्शन सा तब, रत्न मनुज पाते हैं ॥
क्षायिक सम्यग्दृष्टी नित प्रति, आत्म—ध्यान धरता है ।
जन्म जन्म के कर्मों को वह, क्षण में क्षय करता है ६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



मन सुभाव संषिपनं, संसारे सरनि भाव षिपनं च ।
न्याय बलेन विसुद्धं, अन्मोयं ममल मुक्ति गमनं च ॥७॥

इस चंचल मन का स्वाभाव है, नाशवान प्रिय भाई ।
नश्वर है मिथ्यादर्शन की, भी प्रकृति दुखदाई ॥
आत्मज्ञान ही सरल शुद्ध, भावों को उपजाता है ।
सरल शुद्ध भावों के बल से, ही नर शिव पाता है ॥७॥

वैरागं तिविहि उवन्नं, जनरंजन रागभाव गलियं च ।
कलरंजन दोष विमुक्कं मनरंजन गारवेन तिक्तं च ॥८॥

भव, तन, भोगों से निस्पृह बन जाता आत्म—पुजारी ।
जन-रंजन गारव न उसे रह, देता दुख दुखकारी ॥
तन—रंजन के भय से वह, छुटकारा पा जाता है ।
मन—रंजन गारव भी उसके, पास न फिर आता है ॥८॥

दर्सन मोहंध विमुक्कं, रागं दोषं च विषय गलियं च ।
ममल सुभाउ उवन्नं, नन्त चतुस्टये दिस्टि संदर्सं ॥९॥

दर्शन—मोह से हो जाता है, मुक्त आत्म का ध्यानी ।
रागद्वेष से उसकी ममता, हट जाती दुखदानी ॥
घट में उसके आत्म-भाव का, हो जाता उजयाला ।
अनंत चतुष्टय की जिसमें नित, जगती रहती उवाला ॥९॥

तिअर्थं शुद्ध दिष्टं, पंचार्थं पंच न्यान परमेस्टी ।
पंचाचार सुचरनं, सम्मत्तं सुद्ध न्यान आचरनं ॥१०॥

सम्यग्दृष्टी नितप्रति निर्मल, रत्नत्रय को ध्याता ।
पंच ज्ञान, पंचार्थ, पंच प्रभु, का होता वह ज्ञाता ॥
पंचाचारों का नितप्रति ही, वह पालन करता है ।
सब मिथ्या व्यवहार त्याग वह, आत्म-ध्यान धरता है ॥१०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



दर्सन न्याय सुचरनं, देवं च परम देव सुद्धं च ।
गुरुवं च परम गुरुवं, धर्मं च परम धर्म संभावं ॥११॥

आत्म तत्व ही इस त्रिभुवन में, सच्चा रत्नत्रय है ।
सब देवों का देव वही, परमेश्वर एक अजय है ॥
आत्म तत्व ही सब गुरुओं में, श्रेष्ठ परम गुरु ज्ञानी ।
सब धर्मों में श्रेष्ठ धर्म बस, आत्मतत्व सुखदानी ॥११॥

जिन पंच परम जिनयं, न्यानं पंचामि अक्षरं जोयं ।
न्यानेन न्याय विधं, ममल सुभावेन सिद्धि सम्पत्तं ॥१२॥

आत्म तत्व ही सम्यक्त्वी का, परमेष्ठी पद प्यारा ।
आत्म तत्व ही उसका केवलज्ञान अलौकिक न्यारा ॥
आत्म तत्व के अनुभव से ही, आत्मज्ञान बढ़ता है ।
आत्मज्ञान के बल पर ही नर, शिव पथ पर चढ़ता है ॥१२॥

चि दा न न्द चिं त व नं, चेयन आनन्द सहाव आनन्दं ।
कम्ममल पयडि षिपनं, ममल सहावेन अन्मोय संजुत्तं ॥१३॥

सत् चित्-आनन्द चेतन में तुम, रमण करो प्रिय भाई !
इससे तुमको होगा अनुभव, एक अकथ सुखदाई ॥
मुरझा जाती है पापों की, आत्म-मनन से माला ।
कर्म प्रकृतियों की हो जाती, हिम-सी ठण्डी ज्वाला ॥१३॥

अप्पा पर पिच्छंतो, पर पर्जाव सल्य मुक्कं च ।
न्यांय सहावं सुद्धं, सुद्धं चरनस्य अन्मोय संजुत्तं ।।१४।।

'आत्म द्रव्य का पर स्वभाव है, पर द्रव्यों का पर है ।'
इस मन में बहता जब ऐसा, ज्ञान-मयी निर्झर है ॥
पर परणतियें, शल्यें तब सब सहसा ढह जाती हैं ।
जिन स्वरूप की ही तब फिर फिर, झांकी दिखलाती हैं ॥१४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



अवम्भं न चवन्तं, विकहा विनस्य विषय मुक्कं च ।
न्यान सहाव सु समयं, समय सहकार ममल अन्मोयं ॥१५॥

परमब्रह्म में जब चंचल मन, निश्चल हो रम जाता ।
तब न वहां पर अन्य, किन्तु, निज आत्मस्वरूप दिखाता ॥
चारों विकथा, व्यसन, विषय उस क्षण छुप-से जाते हैं ।
परमब्रह्म में रत मन होता, मल सब धुल जाते हैं । ॥१५॥

जिन वयनं च सहावं, जिनय मिथ्यात कषाय कम्मानं ।
अ प्पा सु द्ध प्पा नं, परमप्पा ममल दर्सए सुद्धं ॥१६॥

जिन-मुख सरसीरुह की है यह, ऐसी प्रिय जिनवाणी ।
मल, मिथ्यात्व, कषायें सबको, पल में हरती ज्ञानी !
आत्मतत्व ही शुद्ध तत्व है, जिन प्रभु कहते भाई ।
आत्म मुकुर में ही बस तुमको, देंगे प्रभु दिखलाई ॥१६॥

जिन दिष्टि इष्टि संसुद्धं, इष्ट संजोय विगत अनिष्टं ।
इष्टं च इष्ट रूवं, ममल सहावेन कम्म संषिपनं ॥१७॥

जिनवाणी की श्रद्धा हिय में, शुचि पावनता लाती ।
विरह अनिष्टों से, इष्टों से, वह संयोग कराती ॥
त्रिभुवन में सबसे मृदुतम बस, आत्म-मनन की प्याली ।
आत्म-मनन से ही टूटेगी, कर्म-कमठ की जाली ॥१७॥

अन्यानं नहि दिट्ठं, न्यान सहावेन अन्मोय ममलं च ।
न्यानंतरं न दिट्ठं पर पर्जाव दिट्ठि अंतरं सहसा ॥१८॥

क्षायिक सम्यग्दृष्टी में, अज्ञान नहीं रहता है ।
ज्ञान-तरंगों पर चढ़, नित वह, शिव-सुख में बहता है ॥
आत्म-ज्ञान में अन्तर उसके, नेक नहीं दिखलाता ।
भेद-भाव, पर परिणतियों में, पर सहसा आ जाता ॥१८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



अप्पा अप्पा सहावं, अप्प सुद्धप्प ममल परमप्पा ।
परम सरूवं रूवं, रूवं विगतं च ममल न्यानं च ॥१९॥

आत्मद्रव्य ही है परमोत्तम, शुद्ध स्वरूप हमारा ।
वह ही है शुद्धात्म, यही है, परमब्रह्म प्रभु प्यारा ॥
त्रिभुवन में चेतन-सा उत्तम, रूप न और कहीं है ।
है यह ज्ञानाकार, अन्यतम इसका रूप नहीं है ॥१९॥

ममलं ममल सरूवं, न्यान विन्यान न्यान सहकारं ।
जिन उत्तं जिन वयनं, जिन सहकारेन मुक्ति गमनं च ॥२०॥

जिनके अमृत-वचन मोक्ष से, मृदु फल के दायक हैं ।
हस्तमलकवत् जो त्रिभुवन के, घट घट के ज्ञायक हैं ॥
ऐसे जिन प्रभु भी यह कहते, चेतन अविकारी है ।
आत्म-ज्ञान हो पंच ज्ञान के, पथ में सहकारी है ॥२०॥

ष ट् का ई जी वा नां, क्रिया सहकार ममल भावेन ।
सत्तु जीव सभावं, कृपा सह ममल कलिष्ट जीवानं ॥२१॥

अनिल, अनल, जल, धरणि, वनस्पति, औ त्रस तन में ज्ञानी !
पाये जाते हैं वसुधा पर, सब संसारी प्राणी ॥
इन जीवों पर दया भाव ही, समता भाव कहाता ।
चेतन का यह चिर-स्वभाव, यह भाव-विशुद्ध बढ़ाता ॥२१॥

एकांत विप्रिय न दिट्ठं, मध्यस्थं ममल सुद्ध सब्भावं ।
सुद्ध सहावं उत्तं, ममल दिट्ठि च कम्म षिपनं च ॥२२॥

ज्ञानी जन एकान्त विपर्यय, भाव न मन में लाते ।
स्याद्वाद-नय पर चढ़ कर वे, मध्य-भाव अपनाते ॥
भावों में शुचिता आना ही, कर्मों का जाना है ।
कर्मों का जाना ही भाई ! शिव-पथ को पाना है ॥२२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



सत्वं किलष्ट जोवा, अन्मोय सहकार दुग्गए गमनं ।
जे विरोह सद्भावं, संसारे सरनि दुषवोयस्मि ॥२३।

जो नर संसारी जीवों को, पीड़ा पहुँचाते हैं ।
या पर से दुःख पहुंचा उनको, जो अति सुख पाते हैं ॥
ऐसे दुष्टों का होता बस, नर्क-स्थल में डेरा ।
असम भाव जिसके, उसको बस, मिलता नर्क बसेरा ॥२३।

न्यान सहाव सु समयं, अन्मोयं ममल न्यान सहकारं ।
न्यानं न्यान सरूवं, ममलं अन्मोय सिद्धि सम्पत्तं ॥२४॥

आत्म-सरोवर में रमना ही, ज्ञान-स्वरूप हैं भाई ।
आत्म ज्ञान ही से मिलता है, केवल ज्ञान सुहाई ॥
आत्म ज्ञान ही से पाता नर, पद अरहन्त सुखारी ।
आत्म ज्ञान के बल पर ही नर, बनते शिव—अधिकारी ॥२४॥

इष्टं च परम इष्टं, इष्टं अन्मोय विगत अनिष्टं ।
पर पर्जायं विलयं, न्यान सहावेन कम्मजिनियं च ॥२५॥

त्रिभुवन में सर्वोत्कृष्ट बस, इस चेतन का पद है ।
निज स्वरूप में रमना ही बस, अहित-विगत सुख-प्रद है ॥
आत्म मनन से कर्मों की सब, बेड़ी कट जाती हैं ।
इसके सन्मुख पर पर्यायें, पास नहीं आती हैं ॥२५॥

जिन वयन सुद्धं, अन्मोयं ममल सुद्ध सहकारं ।
ममलं ममल सरूवं, जं रयनं रयन सरूव संमिलियं ॥२६॥

श्री जिनवाणी निश्चयनय का, प्रिय सन्देश सुनाती ।
त्रिभुवनतल में उससी पावन, वस्तु न और लखाती ॥
ज्ञान सिन्धु आतम का भव्यो ! रूप परम पावन है ।
आत्म-मनन से ही मिलता बस, रत्नत्रय-सा धन है ॥२६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



स्रेष्टं च गुन उववन्नं, स्रेष्टं सहकार कम्म संषिपनं ।
स्रेष्टं च इष्ट कमलं, कमलंसिरि कमल भाव उववन्नं ॥२७॥

जगता है शुद्धोपयोग गुण, आत्म—मनन से भाई ।
जिसके बल से गल जाते सब, कर्म महा दुखदाई ॥
कर्म काट, अरहन्त महापद, आत्म—कमल पाता है ।
और यही निज-रूप रमण फिर, शिवपुर दिखलाता है ॥२७॥

जिन वयनं सहकारं, मिथ्या कुन्यान सल्य तिक्तं च ।
विगतं विषय कषायं, न्यानं अन्मोय कम्म गलियं च ॥२८॥

भव-सागर अति दुर्गम, दुस्तर, थाह न इसकी प्राणी !
इसको तरने में समर्थ बस, एक महा जिन-वाणी ॥
जिन—वाणी कुज्ञान, कषायें, शल्य विषय क्षय करती ।
निश्चयनय का गीत सुना यह, सब कर्मों को हरती ॥२८॥

कमलं कमल सहावं, षट्कमलं तिअर्थ ममल आनन्दं ।
दर्सन न्यान सरूवं, चरनं अन्मोय कम्म संषिपनं ॥२९॥

आत्म-कमल अरहन्त रूप में, जिस क्षण मुसकाता है ।
उस क्षण ही, षट गुण त्रिरत्न-दल उसको विकसाता है ॥
दर्शन-ज्ञान—सरोवर में तब, आत्म रमण करता है ।
और अघातिय कर्म नाश, वह शिव में पग धरता है ॥२९॥

संसार सरनि नहु दिट्ठं, नहु दिट्ठं समल पर्जाय सभावं ।
न्यानं कमल सहावं, न्यान विन्यान ममल अन्मोयं ॥३०॥

सिद्ध न संसारी जीवों—से, भव भव गोते खावें ।
अशुचि मलिन परिणतियें उनके, पास न जाने पावें ॥
उनके उर में कमल सदृश बस, केवल-ज्ञान विहंसता ।
शुद्धज्ञान, सत् चित् सुख ही बस, उनके हिय में बसता ॥३०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



जिन उत्तं सद्दहनं, अप्पा परमप्प सुद्ध मंमलं च ।
परमप्पा उवलद्धं, परम सुभावेन कम्म विलयन्ती ॥३१॥

'विज्ञो ! अपना आत्मदेव ही, है जग का परमेश्वर ।
बरसाते इस वाक्य सुधा को, तारण तरण जिनेश्वर ॥
जो जन, जिन-वच पर श्रद्धाकर, बनता आत्मपुजारी ।
कर्म काट, भवसागर तर वह, बनता मोक्ष-बिहारी ॥३१॥

जिनदिष्ट उत्त सुद्धं, जिनयति कम्मान तिविह जोएन ।
न्यानं अन्मोय ममलं, ममल सरूवं च मुक्ति गमनं च ॥३२॥

जैसा जिनने देखा, जैसा बचन-अमिय बरसाया ।
वैसे ही शुद्धात्म तत्व का, मैंने रूप दिखाया ॥
त्रिविध योग से सतत् करेंगे, जो आतम आराधन ।
कर्म जीत, वे ज्ञानानन्द हो, पावेंगे शिव पावन ॥३२॥

॥ इति समाप्तम् ॥

॥ इतिः—श्री तारण त्रिवेणी श्रीजिन तारणतरण विरचित समाप्तम् ॥

卐

# श्रावकाचार की चौदह गाथाएं

देव को नमस्कार—

देव देवं नमस्कृत्तं, लोकालोक प्रकाशकम् ।
त्रिलोकं अर्थं ज्योतिः, ऊंवकारं च विंदते ॥ १ ॥
ऊंवं हियं श्रियं चिंते, शुद्ध सद्भाव पूरितम् ।
सम्पूर्ण सुयं रूपं, रूपातीत विंदुसंयुतम् ॥ २ ॥
नमामि सतत भक्त्या, अनादि सादि शुद्धये ।
प्रति पूर्णति अर्थं शुद्धं, पंच दीप्ति नमाम्यहम् ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



परमेष्ठी परं ज्योति, आचर्न नंत चतुष्टयम् ।
ज्ञानं पंच मयं शुद्धं, देव देवं नमाम्यहम् ॥ ४ ॥
अनंत दर्शनं ज्ञानं, बीर्ज नंत अमूर्तयम् ।
विश्व लोक सुयं रूपं, नमाम्यहं ध्रुव शाश्वतम् ॥ ५ ॥
नमस्कृत्वा महावीरं, केवलं दृष्टि दृष्टितम् ।
व्यक्त रूपं अरूपं च, शुद्धं सिद्धं नमाम्यहम् ॥ ६ ॥
केवली नंत रूपी च, सिद्ध चक्र गणं नमः ।
बोच्छामि त्रिविधं पात्रं, केवलि दृष्टि जिनागमम् ॥ ७ ॥

गुरु को नमस्कार –

साधओ साधुलोकेन, ग्रन्थ चेल विमुक्तयम् ।
रत्नत्रयं मयं शुद्धं, लोकालोक विलोकितम् ॥ ८ ॥
सु सम्यक्तं ध्रुवं दृष्टं, शुद्ध तत्वप्रकाशकम् ।
ध्यानं च धर्म सुक्लं च, ज्ञानेन ज्ञान लंकृतम् ॥ ९ ॥
आर्त्त रौद्र परित्याज्यं, मिथ्यात्त्रय न दृष्टते ।
सुद्ध धर्ममयं भूत्वा, गुरुं त्रैलोक्य वंदितम् ॥ १० ॥

शास्त्र जी को नमस्कार –

सार सरस्वती दृष्ट, कमलासने संस्थितम् ।
ऊं वं ह्रियं श्रियं सुय्यं ति अर्थ प्रति पूर्णितम् ॥ ११ ॥
कुज्ञानं त्रि विनिर्मुक्तं, मिथ्या छाया न दृष्टते ।
सर्वज्ञं मुख वाणी च, बुद्धि प्रकाशं शास्वती ॥ १२ ॥
कुज्ञानं तिमिरं पूर्णं, अंजनं ज्ञान भेषजम् ।
केवली दृष्टि स्वभावं च, जिन कंठ सारस्वती नमः ॥१३॥
देवं गुरुं श्रुतं वंदे, ज्ञानेन ज्ञान लंकृतम् ।
बोच्छामि श्रावकाचारं, अवृत्तं सम्यग्दृष्टितम् ॥१४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



# श्री वृहत् चैत्यालय-मंदिर विधी

१—श्री ममल पाहुड़ जी ग्रन्थ को विराजमान करके तत्वमय दोहों को पढ़ना।

२—कोई भी एक फूलना पढ़ना।

३—झंझा भक्ति द्वारा ५ भजन मय आयरण फूलना के करना। आयरण फूलना के प्रथम १ आरती प्रज्वलित करना।

४—भजनों के बाद—खड़े होकर श्री वाणी जी को (श्री अध्यात्मवाणी ग्रंथ को) सिंहासन पर विराजमान करके—तत्व पढ़कर अस्थाप दिवस में तीनों वत्तीसी जी में से तीन तीन गाथाओं को व श्री ममल पाहुड़ जी ग्रन्थ की नं० ८७ की धर्माचरण फूलना में से उत्तम क्षमा तक की गाथा पढ़ना (इसी तरह १० दिवस में पूरी तीनों वत्तीसी व धर्माचरण फूलना को पूरा कर लेना व ग्यारहवें दिन भादों सुदी पूर्णिमा को तिलक महोत्सव की समाप्ति अच्छे धर्म प्रभावना पूर्वक करना।)

श्री धर्मोपदेश अतुल, अनिर्वचनीय और महादीर्घ कहें केवली पुरुष कहने सामर्थ्य, त्रैलोक्यनाथ, अचिन्त्य चिंतामणि, चिंता कर रहित हैं।

चिन्त्यं नाशनं ज्ञानं, चिन्त्यं नाशनं मलम्।
चिन्त्यं नाशनं मनः यावत भवेत् नाशयं चिन्ताः॥

तथा—चिंता उपजावन हारी ममता और आशा कर सर्वथा रहित हैं यथाशक्य श्रद्धानुसार भव्य जीवन को कल्पवृक्ष की नाई सदा मंगल कर हारे वे भगवान निरेच्छ, निर्दोष, और स्वभाव ही से आद्वितोय दयालु हैं ऐसे श्री जिनेन्द्र भगवान स्वयं ज्ञाता और सिद्ध के जावन हारे, तीन ज्ञान म उत्पन्न होय हैं। परिहरें लिङ्ग-जो तोन लिङ्ग को परिहार कर फिर जन्म न धरें हैं।

अचिन्त्य व्यक्त रूपाय, निर्गुणान् महात्मने।
जगत सर्व आधार मूर्ति ब्रह्मने नमः॥

ऐसे ब्रह्म सरूप मूर्ति को मैं नमस्कार करता हूँ। फिर भगवान उपदेश्या धर्म कैसा है?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



जांचे सुर तरु देय सुख, चिंतत चिंता रैन ।
विन जांचे विन चिंतये, धर्म सकल सुख दैन ॥

उन भगवान् ने आत्म-धर्म रूप धर्म की प्रवर्तना की जिससे अनेकानेक भव्य-प्राणी रागादिक विभाव परिणामों को शमन करके आत्म संयम द्वारा शुभ गति को प्राप्त भये हैं, और श्रद्धा के अनुसार उपदेश ग्रहण करके स्वानुभवानंद रस का पान कर सुख को प्राप्त हुए हैं । प्राणी-मात्र काल-लब्धि पाय ऐसे परमेश्वर्यशालिन अकारण बन्धु भगवान के शरण में जायँ हैं ।

बहुरि-उनके पश्चात् जिनेश्वर प्रणीत शुद्ध द्रव्यार्थिक नय रूप जैन धर्म को धारण कर तत्वों विषैं रुचि प्रतीति धरै हैं, सो अपने हृदयगत अभीष्ट अर्थ की सिद्धि कर कल्याण मार्ग में दृढ़-चित्त और निरंतर लीन होयँ हैं ।

वे भगवान तथा उनका कथित यह जैन धर्म अपने शरण में आये ए प्राणी मात्र पर सहज स्वभाव ही से दयालु और अनेक सिद्धि का करन हारा है ।

उल्टो जीव अनादि को, अब सुल्टन को दाव ।
जो अबके सुल्टे नहीं, तो गहरे गोता खाव ॥

पंचज्ञान—विवेक पूर्ण—दयालु दृष्टि—दया-मूर्ति -कृपा -निधान, सौ इन्द्र कर वंदित श्री परम-गुरु तीर्थंकर भगवान् आप तरैं औरन को तारैं हैं ।

भवनालय चालीसा, व्यंतर देवाण होंति वत्तीसा ।
कप्पामर चौवीसा, चंदो सूरो णरो तिरियो ॥

ऐसे सौ इन्द्र कर वंदित श्री परम गुरु तिन को चलो सम्यक्त्व उपदेश एकं उपदेश, अनंत प्रवेश । सम्यक्त्व उपदेश कैसा है ? जिस उपदेश की रणा से अनते जीव मुक्ति प्रवेश होते आये हैं और होवेंगे । उपदेश यही रुचय सम्यक् उपदेश जो सर्व वस्तु त्यागी महाव्रती मुनिराज ही सों पूर्णतया वै है । और दूसरा व्यवहारिक रूप धर्मोपदेश प्रमाण सहित पंचाणुव्रती स्थ श्रावकों से बनै है, याही उपदेश को धारण कर जीव सम्यक्त्वलाभ कर ाव्रती होय हैं ।

Gânesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



सम्मत्त सलिल पवहो निस्चय हिय प्रवाह बोधस्य ।
कम्मं वालुय वरणं-बंधूच्चिय णासए तस्स ॥

चारित्र आदिकों के द्वारा शुद्ध हुए हृदय—स्थल में सम्यक्त्व रूपी सरिता का प्रवाह कर्म रूपी रेत-कणों के ढेर को हटाकर चारों गतियों के बन्ध की प्रतारणा के नाश का कारण है ।

यह सम्यक्त्वरूपी जल शाँत है, शांतिदायक है । कर्म आताप से व्याकुल हुए प्राणियों के दुःख का हरनहारा है । अपने ज्ञान और चारित्रादि को साथ लिये हुए यह मोक्षमार्ग को निष्कंटक और सुलभ करनहारा जगदेक बन्धु है । याही को गृहण कर अनन्ते पुरुष अनन्त सिद्ध सिद्धालय को प्राप्त हुए हैं । और आगे होवेंगे । मुनीश्वरों के बचन सत्य हैं, ध्रुव हैं, प्रमाण हैं :—

गतोत्सर्पिणी के चतुर्थ कालान्तर्गत चतुर्विंशति तीर्थंकरों में अंतिम तीर्थंकर श्री सन्मति "श्री शान्ती स्वामी" जी को प्रसाद अवसर्पिणो के चौथे कालान्तर्गत चौदहवें प्रजापति श्री नाभिराय जी के पुत्र प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ देव जी लै उत्पन्न भये । कहा प्रसाद लै उत्पन्न भये ? पंच परमेष्ठी के एक सौ तेताळीस गुण, छै यंत्र की पूजा, पचहत्तर गुण, सत्ताईस तत्वों का विचार, एक सौ आठ गुण की जाप, ३ पात्र, दान चार, त्रेपन क्रिया की विधि विचार ।

अर्हन्तछया यल्ला सिद्धं अट्ठामि सूरि छत्तीसा ।
उवज्झाया पणवीसा-अठवीसा होंति साधूनम् ॥
वारा पुज्ज विशेषं-सिद्धं अट्ठामि षोड़सो करणं ।
दह धम्मं दंसण अट्ठा-णाणं अट्ठामि त्रयोदशी चरणं ॥
ये पचहत्तर गुण शुद्धं-वेदी वेदंति णाण सिरि सुद्धं ।
मुक्ति स्वभावं दिढयं-ये गुण आराध सिद्ध संपत्तं ॥
उत्तमं जिन रूपी च-मध्यमं च मति श्रुतौ ।
जघन्यं तत्व सार्धं च-अवृत सम्यग्दिष्टते ॥
गुण वय तव सं पडिमा-दाणं जल गालनं अणत्थमियं ।
दंसणणाण चरित्त'-किरिया तेवण्ण सावया भणियं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



श्री आदिनाथ स्वामी की पांच सौ धनुष ऊँची वज्रमई काया, सवा पांच सौ धनुष ऊँचो वट वृक्ष, चौरासी लाख पूर्व की आयु होती भई। एक पूर्व की संख्या—

सत्तर लाख करोड़मित छप्पन सहस करोड़।
इतनी वर्ष मिलाय कर पूर्व संख्या जोड़॥

स्वामी आदिनाथ देव जू ने प्रथम २० लाख पूर्व वर्ष बाल क्रीड़ा में और ६३ लाख पूर्व वर्ष राज्य शासन में व्यतीत कर शेष एक लाख पूर्व आयु रही प्रमाण तब आदिनाथ स्वामी संसार, देह, भोगों से विरक्त होते भये अनित्यादि बारह भावना भावते भये तब पाँचवें स्वर्ग से ऋषीश्वर जाति के लौकांतिक देव आयकर भगवान के ज्ञान वैराग्य की स्तुति करके भगवान को वैराग्य भावनाओं में दृढ़ करते भये। तब वे भगवान आदिनाथ स्वामी—

पुर पट्टन तज चले हैं निरास—ग्रन्थ छोड़ निर्ग्रंथ उदास।
छांडै राज पाट परिवार—छांडै मंदिर ज्योति अपार॥
सकल वस्तु मेरी कछु नाहीं—भये वैराग्य कैलासहिं जाहीं।

तब, तप कल्याणक के निमित्त इन्द्र आयकर भगवान् को विमला नामक पालकी में बैठाय उत्सव सहित आकाश मार्ग से कैलास पर्वत पर ले गये। तहां पांडुकशिला ऊपर इन्द्रानी ने केसर को सांथिया रच्यो, तिस ऊपर भगवान् विराजमान होय पंच-चेल चौबीस प्रकार के परिग्रह को त्याग कर पंच मुष्टि केशलौंच कर दिगम्बरी दीक्षा धार अट्ठाईस मूल गुण तथा चौरासी लाख उत्तर गुण पालते भये। कर्म निर्जरा के हेतु घोर तपश्चरण के द्वारा चार घातिया कर्मों को नाश कर केवलज्ञान प्राप्त किया।

तब केवल कल्याणक के निमित्त इन्द्रोंने आयकर अड़तालीस कोस के गिरदाकार में समवशरण की रचना करी। साढ़े बारह करोड़ वाद्य बाजते भये। ऐसे महोत्सव पूर्ण समवशरण में भगवान् अपनी दिव्य ध्वनि द्वारा भव्य जीवों को धर्मोपदेश देते भये। भगवान् के उपदेश से समव शरण के मध्य बारह कोठों में बैठे हुए असंख्य-देव, मनुष्य तथा पशुओं तक ने अपने कल्याण का मार्ग ग्रहण किया। तत्पश्चात् भगवान् आदिनाथ ने चौरासी गणधर और चतुर्विध संघ-सहित देश देशान्तरों में विहार कर आयु के अंत में ६ दिन का योग निरोध कर माघ वदी चतुर्दशी को कैलास गिरि से निर्वाण पद प्राप्त किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



जय जय बोलिये जय नमोस्तु । जो उपदेश भगवान् आदिनाथ ने दिया वही उपदेश भगवान् महावीर स्वामी ने दिया ।

आदि में श्री आदिनाथ देव अंत में श्री महावीर देव जी हुए । बाईस तीर्थंकर मध्य में हुए । श्री चौबीसी जी का नाम लीजे तो पुण्य की प्राप्ति होय—"चौवीसी पढ़ना" ।

## वर्तमान चौवीसी

श्री ऋषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति पद्मप्रभु छठे जिनेश्वर ।
सप्तम तीर्थंकर भये हैं सुपारस चन्द्रप्रभु आठम हैं निवारस ॥
पुष्पंदत शीतल श्रेयांस वाँसुपूज्य अरु विमल अनंत ।
धर्मनाथ वंदत अविनीश्वर सोलह कारण शांति जिनेश्वर ॥
कुन्थु अरह मल्लि मुनिसुव्रत वीसा नमियो अष्टांग सिद्ध इकवीसा ।
नेमिनाथ साहसि गिरि नेम सहनसील वाईस परीष ॥
पारसनाथ तीर्थंकर तेईस बर्द्धमान जिनवर चौवीस ।
चार जिनंद चहूँ दिशि गये बीस संमेदशिखिर पर गये ॥
आदिनाथ कैलाशे गये वांसुपूज्य चंपापुर गये ।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार पावापुरी वीर जिनराज ॥
दो धवला दो श्यामला वीर, दो जिनवर आरक्त शरीर ।
हरे वरण दो हो कुलवंत, हेमवरण सोला इकवंत ॥
चौबीस तीर्थङ्कर मोक्षे गये, दश कोड़ाकोड़ी काल बिल भये ।
भये सिद्ध अरु होंय अनंत, जे वंदों चौबीस जिनंद ॥
वंदों तीर्थङ्कर चौबीस, वंदों सिद्ध बसें जगदीस ।
वंदों आचारज उवझाय, वंदों साधु गुरुन के पांय ॥

— दोहा —

देव धरम गुरु को नमो, नमो सिद्ध शिव क्षेत्र ।
विदेह क्षेत्र में जिन नमो, जिनके नाम विशेष ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



# विदेह क्षेत्र के बीस तीर्थङ्करों के नाम

सीमन्धर स्वामी जिन नमों, मन वच काय हिये में धरों ।
युगमन्धर स्वामी जुग पाय, नाम लेत पातक छय जाय ॥
बाहु सुबाहु स्वामी धर धोर, श्री सुजाति स्वामी महावीर ।
स्वयंप्रभू स्वामी जी को ध्यान, ऋषभानन जो कहें वखान ॥
अनंतवीर सूरप्रभ सोय, विशालकीर्ति जग कीरत होय ।
वज्रधर स्वामी चन्द्रधर नेम, चंद्रबाहु कहिये जिन प्रेम ॥
भुजंगम ईश्वर जग के ईश, नेमीश्वर की विनय करीश ।
वीर्यसेन वीरज बलवान, महाभद्र जी कहिये जान ॥
देवयश स्वामी श्री परमेश, अजित वीर सम्पूर्ण नरेश ।
विद्यमान बीसी पढ़ो चितलाय, बाढ़े धर्म पाप छय होय ॥

धर्म आराध आराध्य जीव निर्वाण पद को प्राप्त होय हैं। जिनके खोटे भाव-क्रोध, मान, माया, लोभ, रूप चार कषायें, अष्ट-मद, शंकादि आठ दोष, छह-अनायतन, तीन-मूढ़ता, सप्त व्यसन इत्यादि प्रपंच रूप मिथ्यात्व भाव विलियमान हुए उन्हीं को जिन संज्ञा प्राप्त होती भई।

'एकं जिनं स्वरूपं' एक जिनको स्वरूप सोई चौवीस जिन को-सोई बहत्तर जिनको सोई १४९ चौवीसी को होत भयो। जो स्वरूप श्री आदिनाथ देव जी को सोई श्री महावीर देव जी को होत भयो। भेद विज्ञान प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष कर दर्शायो। केवल आयु-काय अरु समवशरण लघु दीरघ होंयँ। तप तेज, गुण, लक्षण, बल, वीर्य सब के एक से ही होंयँ हैं।

'जिन श्रेणि मार्ग कलन वीर्य' जिन श्रेणि सौ मार्ग नाहीं। कलन कहिये ध्यान सो बल नाहीं, देव सी पदवी नाहीं, दाता सो स्वरूप नाहीं। जिनने कहा दान दियो :—

ये ज्ञान दानं कुरुते मुणीणां-सब्दैर्विलोक्यं सौख्यं प्रबुद्धाः ।
राज्यं च सक्रं बल णाण भूय-लब्ध्वा स्वयं मुक्तिपदं व्रजन्ति ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



पय बारह ( पंच-परमेष्ठी तीन-रत्नत्रय, चार-अनुयोग ) उपयोग बारह (आठ-ज्ञान, चार-दर्शन) या प्रकार ज्ञान को गहकर म्लेच्छ कुमार का जीव शुभ समय पाय स्थान कुंदनपुर नगरी में श्री सिद्धार्थ राजा के यहाँ माता श्री त्रिशला देवी की कूँख विषयँ अवतरित होता भया। महावीर भगवान् का अवतार जान इन्द्रादिक देव जन्म कल्याणक महोत्सव के निमत्त भक्ति भाव सहित भगवान को इन्द्र गोद में लेय पांडुक शिला पर ले जाय कर प्रभु का जन्म कल्याणक किया। तत्पश्चात् 'इन्द्र' 'भगवान्' को माता की गोद में सौंप स्वस्थान को प्रस्थान करता भया। श्री वीर देव जी की ७२ वर्ष की आयु जिसमें १२ वर्ष बाल्य क्रीडा में ३० वर्ष राज्य शासन में व्यतीत कर अपने समस्त राजपाट का परित्याग कर जिनदीक्षा धारण करके बारह वर्ष महान् तपश्चरण कर व्यालीस वर्ष की अवस्था में केवलज्ञान प्राप्त किया। तब अनेकानेक देव देवियों सहित इन्द्र आयकर समवशरण की रचना करते भये। भगवान् की वाणी के प्रकाशनार्थ श्री गौतम-स्वोतम आदि ग्यारह गणधर आते भये। तब भगवान् की दिव्य ध्वनि प्रगट होती भई। भावी तत्व प्रसाद कोन को दियो महाराजाधिराज राजा श्रेणिक को दियौ। राजा उपशम श्रेणिक के १०० पुत्र जिनमें ४९ से लहूरे ५० से जेठे मध्य नायक पूरा क्षेत्री बारे को पुण्य प्रताप राजा श्रेणिक के बारे प्रसाद पायो। जब ३९१९ आत्माओं को साथ लेजाय कर भगवान् की वन्दना स्तुति की और इन्द्रों ने इन्द्रध्वज पूजा तथा चतुर्विध संघ ने देवाङ्गली पूजा पढ़कर जैजैकार किया।

## मङ्गल

( १ )

चौथे काल के अंत सो वीर जिनंद भये।
समवशरण के हेतु सो विपलाचल गये॥
उपवन आये देव तो मन आनन्द भये।
षट ऋतु फूले फूलसो अचरज मन भये॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



उपवन लियो है विश्राम मालो ने सुध लही ।
उकटे काठ फल फूल मालती खिल रही ॥
ऐसी मालती फल फूल रहियो, सरवर हंस मोती चुनें ।
गाय व्याघ्र जहां करत क्रीड़ा, और अचरज को गिनें ॥
सहर्ष फूल लै चलो है माली, नृपति जाय सुनाइयो ।
यह देख अचरज भूप मोहे, रानी चेलना तुरत बुलाइयो ॥
निज शत्रु जो घर मांहि आवै, मान वाको कीजियो ।
शुभ ऊँची आसन मधुर वाणी, बोल कैं यश लीजियो ॥
भगवान् सुगुरु निदान मुनिवर, देखकर मन हर्षियो ।
पड़गाह लीजे दान दीजे, रत्न वर्षा बरसियौ ॥
निज श्रेणि अन्तर हिय निरंतर, जैन जुगति सुनाइयो ।
राज्य परिग्रह छाँड चालो, प्रिय सिद्ध मंगल गाइयो ॥

( २ )

समवशरण चौसद्ध सो अचरज मन भयौ ।
जैनधर्म पहिचान महोत्सव उठ चल्यौ ॥
हरषन वीर जिनेंद्र श्रेणि सन्मुख भये ।
विश्वसेन दातार, शाह पद जिन दिये ॥
शाह पद त्रैलोक जानो तीर्थंकर गोत्र सुनाइयो ।
वीर को प्रसाद प्रगटो तिलक जिन चौवीसियो ॥
सोई साह सूरौ ज्ञान पूरौ दया धर्म सुनाइयो ।
अगम निगम प्रवेश पहुँचे सिद्ध मंगल गाइयो ॥

( ३ )

मिथ्यात्व दलन सिद्धान्त साधक, मुकति मारग जानियों ।
करनी अकरनी सुगति दुर्गति, पुण्य पाप बखानियों ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



संसार सागर तरण तारण गुरु जहाज विशेखियो ।
जग मांह गुरु सम कहें बनारसी, और काहू न लेखियो ॥

इस प्रकार की अनेक बिनती प्रार्थनाएं पढ़ते हुए हजारों श्रावक-नर नारियों के बीच जन समूह के साथ राजा श्रेणिक मान सहित रथारूढ़ हुए समौशरण में जा रहे थे—इस समय तक श्रेणिक का श्रद्धान जैनधर्म के विपरीत था कि जिस विपरीत श्रद्धान से मुनिराज के गले में सर्प डालकर ७ वें नर्क की गति बांध ली थी। जब आप समौशरण के पास पहुँचे मानस्थंभ देखते ही आपके हृदय का मान दूर हो गया। तब "रथ से उतर पयादे भये, जय-जय करत सभा में गये, जब जिनेन्द्र देखे चितलाये, जन्म-जन्म के पाप नशाये, दोउ कर जोड़ प्रदक्षिणा दई, निर्मल मति राजा की भई"। यही समय था जब राजा श्रेणिक के भीतर भगवान के प्रति अत्यन्त-गाढ़ श्रद्धा उत्पन्न हो रही थी और अपने उस मुनिराज के गले में डालने वाले साँप का भीतर ही भीतर महान् पश्चाताप हो रहा था कि जिसके फलस्वरूप आपकी वह ७वें नर्क की गति बंध टूट कर पहले नर्क के सीमंत नाम के पहले पाथड़े के पहले बिले में जाने की रह गई जिसकी आयु १७५० वर्ष की भावसार ग्रंथ तथा अपराजित् स्वामी कृत त्रिलोक सार ग्रन्थ में कही है। तथा पहले नर्क के पहले पाथड़े के पहले बिले में जाने का प्रमाण नेमचन्द्राचार्य कृत चौबीसठाणा जी ग्रन्थ में कहा है। इस तरह राजा श्रेणिक अत्यन्त श्रद्धा और भक्ति से जब भगवान की प्रदक्षिणा दे रहे थे और जैनधर्म की प्रभावना तथा अतिशय देख जैनधर्म पर गाढ़-श्रद्धा हृदय में उत्पन्न हो रही थी इसी समय आपको क्षायक सम्यक्त्व की प्राप्ति हो गई और आप भगवान के सन्मुख खड़े होकर विनती करते हुए।

जय जय स्वामी, त्रिभुवन नाथ, कृपा करो मोहि जान अनाथ ।
हों अनाथ भटको संसार, भ्रमतन कबहूँ न पायो पार ॥
तासे शरण आयो मैं सेव, मुझ दुःख दूर करो जिनदेव ।
कर्म निकंदन महिमा सार, अशरण शरण सुयश विस्तार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



नहिं सेऊं प्रभु तुमरे पांय, तो मेरो जन्म अकारथ जाय ।
वार-वार शिर नाऊं तोय, या सेवा फल दीजे मोय ॥

इनकी श्रद्धा स्मरण बंदना-भक्ति देख गणधरादि श्रुतकेवली संतुष्ट होय उपदेश करते भये कि :—

श्री सम्यक् दर्शन् ज्ञान चारित्र को, आरसी सो परम सुखकारी है—विवेकी नरन कों । आत्मा धनंतर सींचवे कों, मेघमाला सुमति-सरूपी धर उज्वल करन कों । प्रवल कषाय कंद काटवे कों आरा जन्म जरा मृतु दीरघ दुःख आपदा हरन कों, कामना भरण ऐसी भव्यनि शरण सदा मंगल करन हारी या वाणी तारण तरण की । तथा—

भव्यन को हृदय शुद्ध, सोई है भूमि जहां ।
मतिज्ञान विमल जाकी जड़ ठहराइये ॥
फैल रहीं चहुं ओर शाखायें अनेक नय ।
पत्रन को सघन ताई बचन विध गाइये ॥
सुन्दर सुभग पुष्प अर्थ हैं विशाल जामें ।
तत्वन को श्रद्धान फल दर्शाइये ॥
ऐसो शास्त्र तरुवर पायो ।
पुण्य पूरव से यामें बुद्धिमान् मन मर्कट रमाइये ॥

और तिस पीछे श्री गौतम गणधर राजा श्रेणिक से कहते भये कि हे राजा श्रेणिक । तुम कथा के नायक होओगे अर्थात् आगामी चौथे काल के आदि में पद्मपुंग राजा के यहाँ पद्मनाभ तीर्थंकर होउगे । तब राजा श्रेणिक ने कही मुनीश्वरों के बचन सत्य हैं, ध्रुव है, प्रमाण हैं ।

चलंति तारा प्रचलंति मंदिरं, चलंति मेरु रविचन्द्र मंडलम् ।
कदापि काले पृथ्वी चलंति, सत्पुरुषस्य वाक्यं न चलंति धर्मम् ॥

अपनो पद परसत राजा श्रेणिक आनंद पूर्ण भये । भगवान् महावीर स्वामी ने केवलज्ञान होने पीछे ३० वर्ष पर्यन्त संघ सहित विहार कर जग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



जीवों का कल्याण किया तत्पश्चात् आहूट महिना होनो वर्ष चउकाल तुरिय कालम्मि—

अर्थात्—चौथे काल के अंत ३ वर्ष साढ़े आठ माह शेष रहने पर भगवान् महावीर ने अपनी ७२ वर्ष की आयु में पूर्णकर कार्तिक वदी चतुर्दशी की रात्रि के पिछले पहर स्थान पावापुरी में निर्वाण पद प्राप्त किया। जय बोलिये जय नमोस्तु—

आशा एक दयालु की जो पूरै सब आश।
संसार आस सब छांड़ि के, प्रभु भये मुक्ति के वास॥

धन्य हैं वे सत्पुरुष जिनने संसार के विषय भोगों की आशा त्यागी, कैसी है संसार की आशा ?

आशा नाम नदी मनोरथ जला तृष्णा-तरंगा कुला।
राग ग्राहवती वितर्क विहगा धैर्य-द्रुमध्वंसिनी॥
मोहा वर्त्तसुदुस्तराऽतिगहना प्रोत्तुङ्गचिंतातटी।
तस्याः पारगता विशुद्ध मनसो धन्यास्तु योगीश्वराः॥

अर्थात् धन्य हैं वे योगीश्वर जिन्होंने ऐसी आशा रूपी नदी को पार किया। हे-भव्य जीवो आशा कीजिये तो केवल एक धर्म की कीजे और हौंस कीजे तो चारित्र की, छंद की फूलना भजन की, दान की, तप की, शील संयम की, भावना की कीजै या आस हौंस के किये यह जीव मुक्ति के सुख मिलसै।

सर्वथा रंज, रमन, आनंद वांछा पूर्ण होय कहने प्रमाण जिनेश्वर देव जी के जिन कहें, जिनके स्थाप रूप वाणी कहे, जिनज्योति वाणी ज्ञान श्री, कंठ कमल मुखारविन्द वाणी श्री भंया रूइया रमन जी कहें। जिन गुरुन को कहनो सत्य है ध्रुव है प्रमाण है।

इष्ट-इष्ट उत्पन्न गोष्टि, चरचा बैठक विलास, पढैया पढै अपनी बुद्धि विशेष, सुनैया सुनत है अपनी बुद्धि विशेष-पढ़ता से और वक्ता से श्रोता को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



लक्षण दीर्घ हैं। कब दीर्घ हैं जब गुण गुण को जाने दोष दोष को पहचाने गुण को ग्रहण करे, दोष को परित्याग करे तब श्रोता को लक्षण दीर्घ है।

इष्ट ही दर्शन इष्ट ही ज्ञान ऐसा जानकर हे भाई आठ पहर की साठ घड़ी में एक घड़ी दो घड़ी स्थिर चित्त होय, देव—गुरु—धर्म को स्मरण करे तो इस आत्मा को धर्म लाभ होय कर्मन की क्षय होय और धर्म आराध आराध्य जीव परंपरा निर्माण पद को प्राप्त होय है। अब कहा दर्शावत हैं आचार्य—

## शास्त्र सूत्र सिद्धांत नाम अर्थ जी—

१—शास्त्र नाम काहे सों कहिये जामें साश्वते देव, गुरु, धर्म, की महिमा चले, आचार—विचार क्रियाओं का प्रतिपादन होय, ज्ञान की उत्पत्ति कर्मों की खिपति जीव की मुकति दर्शन-ज्ञान-चारित्र कलन-रमन चवन-दृढ़ जान-दृढ़ मुकति-दृढ़ ऐसो समुच्चय वर्णन जामें होय ताको नाम शास्त्र जी कहिये।

२ - सूत्र नाम काहे सों कहिये जिसमें संक्षेप में ही बहुत सार भूत कथन होय, जाके सुने से जीव के मन, बचन, काय, एक रूप हो जायँ नहीं तो मन कहूँ को चले, बचन कछू कहे, काया जाकी स्थिर न होय ताको एक सूत्र न होय। धन्य हैं—धन्य हैं श्री गुरु तारण तरण मन्डलाचार्य महाराज जिनके मन, बचन, काय, उत्पन्न, हित, शाह, नो, भाव, द्रव्य यह नौ सूत्र सुधरे तथा दशवें आत्म-सूत्र की उपलब्धि कर अर्थात् आत्म ज्ञान की प्राप्ति करके चौदह सिद्धांत ग्रन्थों की रचना करी—

सूत्रंजं जिन उक्तं, तंश्रुतं शुद्ध भाव संकलियं।
असूत्रं नहु पिच्छन्ति, सूत्रं सशि सहाव शुद्ध मप्पाणं॥

३—सिद्धांत नाम काहे सों कहिये—जामें पूर्वा पर विरोध रहित सिद्धांत रूप चर्चा हो, सप्त-तत्व, नव-पदार्थ छह-द्रव्य पंचास्ति-काय ऐसे सत्ताईस तत्वों का यथार्थ निर्णय किया होय तथा आत्मोपलब्धि की वार्ता चले ताको नाम सिद्धांत-ग्रन्थ कहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



आगे प्रथमानुयोग ग्रन्थ जामें २४ तीर्थंकर १२ चक्रवर्ती ९ नारायण ९ प्रतिनारायण ९ बलभद्र ऐसे ६३ शलाका महापुरुषों की कथा का वर्णन होय ताको प्रथमानुयोग ग्रन्थ कहिये ।

यथा नाम तथा गुण, गुण शोभित नाम, नाम शोभित गुण। धन्य हैं वे भगवान जिनके नाम भी वन्दनीक हैं और गुण भी वंदनीक हैं।

दोहा—

नाम लेत पातक कटें, विघन विनासे जांय ।
तीन लोक जिन नाम की, महिमा वरणी न जाय ॥१॥

गुण अनंतमय परमपद, श्री जिनवर भगवान ।
ज्ञेय लक्ष है ज्ञान में, अचल महा शिवथान ॥२॥

अगम हतो गुरुगम्य विना, गुरुगम दई लखाय ।
लक्ष कोस की गैल है, पल में पहुँचे जाय ॥३॥

विघन-विनाशन भयहरन, भयभंजन गुरुतार ।
तिनके नाम जो लेत ही, संकट कटत अपार ॥४॥

कठिन काल विकराल में, मिथ्यातम रहो छाय ।
सम्यकभाव उदोत कर, शिवमग दियो बताय ॥५॥

परम्परा यह धर्म है, केवल-भाषित सोय ।
ताकी नय वाणी कथित, मिथ्या मत कों खोय ।६॥

धन्य धन्य जिनधर्म को, सब धर्मों में सार ।
ताको पंचमकाल में, दरसायो गुरु तार ।७।

धन्य धन्य गुरु तारजी, तारण तुमरो नाम ।
जो नर तुमको जपत है, सिद्ध होत सब काम ।८।

जो कदापि गुरु तार को, नहिं होतो अवतार ।
मिथ्या भव सागर विषैं, कैसे लहते पार ॥९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



अब शास्त्र जी का नाम कहा, सो-दर्शावित हैं .....।

श्री कहिये शोभनीक-मंगलीक जय जयवन्त श्री भगवान् स्वामी के मुखारविन्द की वाणी इस पञ्चम काल में श्री गुरु तारण तरण मण्डलाचार्य महाराज ने प्रगटी-कथी-कही नाम दर्शाई। तिनके मति श्रुत ज्ञान परम शुद्ध हुए अवधि को वरंदाजो भयो अर्थात् देशावधि ज्ञान उत्पन्न हुओ, मति, श्रुत ज्ञान की विशेष निर्मलता में आपने -आचारमत में-श्री श्रावकाचार जी ग्रन्थ। विचारमत में-श्री पंडित पूजा, मालारोहण और कमल वत्तीसीजी ग्रंथ की रचना करी तथा सारमत में-श्री न्यान समुच्चय सार, उपदेश शुद्ध सार, त्रिभंगी सार। ममल मत में-श्री ममल पाहुड़ जी ग्रंथ और श्री चौवीस ठाना, तथा केवल मत में-श्री छदमस्थ वाणी, नाम माला, खातिका विशेष सुन्नस्वभाव और सिद्धि स्वभाव की रचना करी।

इस प्रकार पाँच मतों में चौदह ग्रंथ की रचना करी। जहां जैसो शब्द होय सहाय श्री तारण तरण जी को। इति धर्मोपदेश।

नोट-यह धर्मोपदेश पूर्ण होने पर स्थाप किये हुए ग्रन्थ की गाथाओं को पढ़कर उनका अर्थ करना और अंत में तीनों आशीर्वाद पढ़े जाना चाहिये। जब आशीर्वाद पढ़े जावें सब भाईयों को सावधान हो जाना चाहिये।

卐

## ❀ आशीर्वाद ❀

पहला—

ॐ उवन उववन्न उव सु रमण, दिप्तं च दृष्टि मयं।
हिययारं तं अर्क विन्द रमणं, शब्दं च प्रायोजितम् ॥
सहियारं सहिनंत रमण ममलं उववन्नं शाहं ध्रुवं।
श्रुतं देव-उववन्न जय जयं च जयनं उत्पन्नं मुक्ते जयं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



दूसरा—

जुगयं खण्ड-सुधार रयण अणुवं, निमिषंसु समयं जयं ।
घटयं तुझ मुहूर्त पहर पहरं, दुतिय पहरं ॥
चत्रु पहरं दिप्त रयणी वर्ष स्वभावं जिनं ।
वर्ष खिपति सु आयु काल कलनो, जिन दिप्ते मुक्ते जयम् ॥

तीसरा—

वे दो छण्ड विरक्त चित्त दिदियो, कायोत्सर्गामिनो ।
केवलिनो नृत लोय लोय, पेख पिखणं, दलयं च पञ्चेन्द्रिनो ॥
धर्मो मार्ग प्रकाशिनो जिन तारण तरो, मुक्तेवरं, स्वामिनो ।
श्रुतं-देव जुग आदि तारण तरो, उववन्नं श्री 'संघं' जयम् ॥
सर्व मंगल-मांगल्यं, सर्व-कल्याण कारकम् ।
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ॥
उत्पन्न रज्ञ प्रवेश गमनं छदमस्थ स्वभाव ।
सुःखेन-सुःखेन ये दुखानि काल विलयन्ति ॥

卐

## आशीर्वाद—अंतिम

अप्प समुच्चय जानिये ऋषि-यति मुनि अनगार ।
पढ़ परचैं कर्महिं खिपैं, सिद्ध होंय तिहिवार ॥

सिद्ध जांय देवन के दाता, गुरु के उपदेशें अपनी धारण के निश्चय अपनी धारण के परिचय केतेक जीव निश्चय—निश्चय व्यासी हजार वर्ष पश्चात् सुक्खं—सुक्खं काल खिपाय चौथे काल के आदि में पद्मपुङ्ग राजा के यहां पद्मनाभि तीर्थंकर देव अनुमोय स्वयं गामिनो मुक्ति के विलास असंख्यं गुणं निर्भय वली समर्थ, धर्म सत्य है ध्रुव है प्रमाण है :—

जय जय बोलिये जय नमोस्तु :—कहकर अवलवली पढ़ना चाहिये :-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



## अबलबली

जय गुरु अबल बली उवन कमल, वयन जिन ध्रुव तेरे ।
अन्मोय शुद्धं रंज रमण, चेत रे मण मेरे ॥
जय तार तरण समय तारण, न्यान ध्यान विवंदे ।
आयरण चरण शुद्धं, सर्वन्य देव गुरु पाये ॥
जय नंदा आनंद, चेयानंद सहज परमानंदे ।
परमाण ध्यान स्वयं, विमल तीर्थङ्कर नाम वंदे ॥
जय कलन कमल, उवन रमण रंज रमण राये ।
जय देव दीपति स्वयं, दीपति मुकति रमण राये ॥

卐

## गुरु तोहि ध्यावत सुःख अनन्ता

स्वामी तारण जिनदेवा ।

उत्पन्न रंज रमण नंद जय मुक्ति दायक देवा ॥
काऊण णमुक्कारं जिनवर बसहस्स बड्ढमाणस्स ।
दंसणमग्गं वोच्छामि, जहाकम्मं समासेण ॥
सव्वण्हु सव्वदंसी, णिम्मोहा वीयराय परमेट्ठो ।
वन्दित्तु तिजगवन्दा अरहंता भव्य जीवेहिं ॥
सपरा जङ्गमदेहा, दंसणणाणेण सुद्धचरणाणं ।
णिग्गंथ वीयराया जिणमग्गे एरिसा पडिमा ॥
मणुयभवे पंचिंदिय, जोवट्ठाणेसु होइ चउदसमे ।
एदे गुणगणजुत्तो गुणमारूढ़ो हवई अरुहो ॥
णाणमयं अप्पाणं उवलद्धं जेण झड़ियकम्मेण ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



चइऊण य परदव्वं णमो णमो तस्स देव्वस्य ॥
जिणबिम्बं णाणमयं संजमसुद्धं सु वीयरायं च ।
जं देइ दिक्खसिक्खा कम्मवखय कारणं सुद्धा ॥
संसग्ग कम्मखिवणं सारं तीलोय न्याय विन्यानं ।
रुचियं ममलसहावं संसारे तरण मुक्तिगमणं च ॥
गुणवय तवसम पड़िमा दाणं जलगालणं अणत्थमिय ।
दंसण णाण चरित्तं किरिया तेवण्ण सावया मणिया ॥

卐

# श्री नन्त दिप्ति की आरती

जय-जय नन्त-दिप्ति जी की आरती कीजे ।
आज देव जू को मंगल है ॥
जय-जय आरती अपने देव की कीजे । आज देव जू को मंगल है ॥
जय-जय आरती तारन देव की कीजे । आज देव जू को मंगल है ॥
जय-जय आरती श्री जिनवाणी की कीजे । आज देव जू को मंगल है ॥
जय-जय भली आरती इन्द्र प्रचारो । आज देव जू को मंगल है ॥
जय-जय सोने के थार मोतिन के पुन्जन ।
आरती अपने देव की कीजे, आज देव जू को मंगल है ॥
जय-जय कनक दीप कृष्णा गुरु वाती ।
आरती अपने देव की कीजे आज देव जू को मंगल है ॥
जय-जय आरती तारन गुरु की कीजे । आज देव जू को मंगल है ॥
जय-जय आरती श्री जिनवाणी की कीजे, आज देव जू को मंगल है ॥
जय-जय आरती नन्त दिप्ति की कीजे । आज देव जू को मंगल है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



# श्री मंगला आरती

ये ऐसो मंगल, ये ऐसो मंगल जो नित होय सदा नित होय-
आज देव जू को मंगल है ।
मोरे स्वामी ध्रुव-पद ध्रुव-पद ध्याइये । आज देव जू को मंगल है ॥
ये ध्रुव अवल अहो ध्रुव अवलबली निर्वान ।
मोहे प्यारो लागे स्वामी हो, आज देव जू को मंगल है ॥
ये जहां लेत अहो जहां लेत जिनेश्वर नाम ।
मोहे प्यारो लागे स्वामी हो । आज देव जू को मंगल है ॥
ये ऐसे गुरु पर अहो ऐसे गुरु पर छत्र तनाव ।
आज देव जू को मंगल है ॥
ये ऐसे गुरु पर अहो ऐसे गुरु पर चमर ढुराव ।
आज देव जू को मंगल है ॥
ये सब 'समय' अहो सब 'समय' रहीं लो लाय ।
आज देव जू को मंगल है ॥
ये ऐसो समय अहो एसो समय न बारंबार ।
आज देव जू को मंगल है ॥
ये स्वामी देओ अहो स्वामी देओ मुकति परसाद ।
आज देव जू को मंगल है ॥

॥ इति ॥

卐

# तिलक—परसाद

तिलक—चन्दन की कटोरी पहले पंडित जी को दी जाय, पं० जी.....

सत्संयम पयःपूर पवित्र जगत्त्रयम् ।
शान्तिनाथं नमस्यामि विश्वविघ्नौघशान्तये ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri



यह मन्त्र पढ़कर चन्दन को मंत्रित करदें, तब वह चन्दन सबको लगाया जाय ।

परसाद—आए हुए वृत भण्डार की रकम तथा परसाद की थाली पहले पंडित जी को दी जाय । पं० जी० उसे हाथ में लेकर यह कहकर धन्यवाद सरूप आशीर्वाद देवें कि—

स्थान .....निवासी भाई.....का प्रभावना निमित्त यह.....का परसाद तथा.....रुपया वृत भंडार में आए । आपके शुभ भावों की बढ़ती हो ।

यदि पात्र भावना हो या दूसरी संस्थाओं को दान अथवा कोई उपकरण आये हों तो व्रत भण्डार के साथ में सब को सूचित कर दें ।

## ॥ इति प्रथम अध्याय समाप्तं ॥

5256

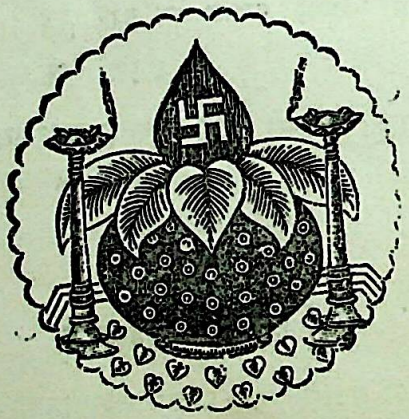

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi